https://www.facebook.com/Kamal.Sandesh/ www.kamalsandesh.org @kamalsandeshbjp

कमल संदेश

भारत और रूस के बीच रणनीतिक भागीदारी को और अधिक मजबूती मिली

वर्ष-13, अंक-11 01-15 जून, 2018 (पाक्षिक) ₹20

कर्नाटक विधानसभा चुनाव परिणाम 2018

कर्नाटक में खिला कमल

नॉर्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक अलायंस (नेडा) बैठक

भाजपा बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन, बम्बोलिम (गोवा)

ग्राम स्वराज अभियान पूरी तरह सफल

कर्नाटक में भाजपा को जनादेश के बाद दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का स्वागत करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह और अन्य वरिष्ठ भाजपा नेतागण

कर्नाटक जनादेश के बाद भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

कर्नाटक जनादेश के बाद दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह और भाजपा संसदीय बोर्ड के सदस्यगण

नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में भाजपा राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, प्रदेशाध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों और प्रदेश महामंत्रियों (संगठन) के साथ पार्टी सांगठनिक गतिविधियों पर चर्चा करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

गुवाहाटी (असम) में आयोजित नॉर्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक अलाएंस (नेडा) की तीसरी बैठक को संबोधित करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

कमल संदेश

पाक्षिक पत्रिका

संपादक
प्रभात झा

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक
संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य
सत्यपाल
राम नयन सिंह

कला संपादक
विकास सैनी
मुकेश कुमार

संपर्क
फोन: +91(11) 23381428

फैक्स
फैक्स: +91(11) 23387887

ई-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com

वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

06 कांग्रेस के विरुद्ध है कर्नाटक का जनादेश: अमित शाह

कर्नाटक की जीत के साथ भारतीय जनता पार्टी ने दक्षिण भारत में भी जोरदार उपस्थिति दर्ज करा दी। गत 15 मई को आए कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और बहुमत से महज 7 सीटें दूर रह गई। राज्य की 224 सदस्यीय विधानसभा के लिए 222 सीटों पर 12 मई...

वैचारिकी

आधारभूत लक्ष्य 17

श्रद्धांजलि

माधव सदाशिव राव गोलवलकर 20

लेख

जनता सत्य के निकट रहती है 22

अन्य

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 1333 परियोजनाएं पूर्ण या क्रियान्वित की जा...15
'कांग्रेस के काले कारनामे जनता के सामने उजागर' 19
किसान मोर्चा राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, गुरुग्राम 21
'देश में परिवारवाद की राजनीति का अंत' 24
तृणमूल कांग्रेस प्रायोजित हिंसा के बीच भाजपा दूसरी सबसे बड़ी... 25
ग्राम स्वराज अभियान पूरी तरह सफल: अमित शाह 26
भारत और रूस के बीच रणनीतिक भागीदारी को और मिली मजबूती28
नक्सल प्रभावित क्षेत्र में 40 से 45 प्रतिशत की कमी: राजनाथ सिंह 29
नेपाल के साथ सांस्कृतिक-आर्थिक संबंध और मजबूत हुए 30
प्रधानमंत्री ने 'किशनगंगा पनबिजली परियोजना' राष्ट्र को ... 32

स्थायी स्तंभ

सोशल मीडिया से 04
व्यंग्य चित्र 04

10 'हमने हमेशा नॉर्थ ईस्ट के अधिकारों को स्वीकार किया है'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 20 मई को श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी (असम) में नार्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक अलायंस (नेडा)...

12 भाजपा की आत्मा बूथ कार्यकर्ताओं के भीतर बसती है: अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 13 मई को डॉ. श्यामा प्रसाद...

14 एक करोड़ 10 लाख हुई 'अटल पेंशन योजना' के सदस्यों की संख्या

अटल पेंशन योजना (एपीवाई) के 3 साल पूरे होने पर इस स्कीम के सदस्यों की संख्या 1...

16 सिर्फ चार वर्षों में सिटी गैस वितरण का कवरेज दोगुना हुआ

केन्द्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस तथा कौशल विकास मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने...

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा मुद्रित, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, बी-2, सेक्टर-63, नोएडा (उ.प्र.)-201307 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। सम्पादक- प्रभात झा

twitter

@narendramodi

कश्मीरियत के अटल जी भी कायल रहे हैं और इसी कश्मीरियत का मैं भी मुरीद हूं। न गाली से समस्या सुलझने वाली है, न गोली से, समस्या सुलझेगी हर कश्मीरी को गले लगाने से।

@AmitShah

यह भाजपा की ही सरकारें हैं जिन्होंने किसानों के कर्ज माफ किये है कांग्रेस ने नहीं। उद्योगपतियों की कर्ज़ माफी पर सार्वजनिक सभाओं में झूठ बोलकर देश की जनता को गुमराह करने वाले कांग्रेस के अध्यक्ष या तो साबित करें कि किसका कर्ज माफ हुआ है या फिर जनता से माफी मांगे।

@myogiadityanath

जीवन एक कला है। धैर्य के साथ अपनी ऊर्जा और प्रतिभा को समुचित ढंग से प्रयोग करने वाले के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। जीवन में कुछ विशिष्ट करने के लिए सकारात्मक नजरिये की आवश्यकता होती है। केन्द्र और प्रदेश सरकार दिव्यांगजन के कल्याण के लिए सतत् कार्यरत है।

facebook

इस्निप परियोजना के ज़रिए सरकार ने कुपोषण दर को कम करने में कामयाबी पायी है, जिसके प्रतिफल के रूप में इस परियोजना के लिए छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार मिला। मैं और मेरी सरकार छत्तीसगढ़ में कुपोषण को जड़ से उखाड़ने के लिए संकल्पित हैं। — डॉ. रमन सिंह

माननीय प्रधानमंत्री जी का एक और सपना है कि भारत खुले में शौच से मुक्त हो। झारखण्ड इसी वर्ष 2 अक्टूबर तक पूरी तरह ओडीएफ हो जाएगा। हमने रिकॉर्ड टाइम में 22 लाख शौचालय बना लिए हैं। इस सपने को पूरा करने में हमारी रानी मिस्त्री बहनें भी अहम भूमिका निभा रही हैं।

— रघुबर दास

कर्नाटक में भाजपा 40 से 104 सीटों पर पहुंच गई, जबकि कांग्रेस को सरकार गंवाकर छोटी पार्टी के अधीन उपमुख्यमंत्री पद से संतोष करना पड़ा। वे भाजपा को विधानसभा में बढ़ने से नहीं, केवल कुछ दिन के लिए सत्ता में आने से रोक पाए हैं। अच्छा है कि राहुल गांधी ने पराजय में खुश रहना जल्द ही सीख लिया।

— सुशील कुमार मोदी

व्यंग्य चित्र

साभार : नई दुनिया

साभार : सोशल मीडिया

कर्नाटक में भाजपा को मिला जनादेश

कर्नाटक चुनाव का जनादेश स्पष्ट था। भाजपा न केवल सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, बल्कि पूर्ण बहुमत से केवल सात ही सीट दूर रही। जनादेश को यदि व्यापकता में देखा जाये तब यह भाजपा के पक्ष में रही, जिसे समाज के लगभग हर वर्ग का समर्थन प्राप्त हुआ। यह स्पष्ट था कि लोगों की इच्छा प्रदेश में भाजपा सरकार देखने की थी और इसी अनुरूप मतदान भी हुए थे। पर परिणामों के गणित में भाजपा केवल कुछ ही सीट दूर रह गई। 224 सीटों की विधानसभा में जिसमें 222 सीटों पर मतदान हुए थे, भाजपा को 104 सीटें प्राप्त हुईं। यह प्रदेश की जन–जन की इच्छा को दर्शाता है। इसलिये यह भाजपा का दायित्व भी था कि इस जनाकांक्षा के अनुसार वह सरकार बनाने का प्रयास करती, जो जनादेश में परिलक्षित हो रही थी। साथ ही, सबसे बड़े दल होने के कारण भाजपा ही एक स्थिर एवं विकासोन्मुखी सरकार जनता को दे सकती थी। इसलिये सरकार बनाने का दावा राज्यपाल को पेश कर भाजपा ने प्रदेश की जनता के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन किया।

कर्नाटक के जनादेश को राजनैतिक पंडित अपने–अपने ढंग से परिभाषित करेंगे, परन्तु इस पर शायद ही कोई दो राय होगी कि यह जनादेश कांग्रेस के विरुद्ध था। कांग्रेस की सीटों में तो भारी कमी आई ही, साथ ही इसके प्रमुख नेता एवं निवर्तमान मुख्यमंत्री अपनी दो सीटों, जहां से वे चुनाव लड़ रहे थे, में से एक पर बुरी तरह पराजित हुए और दूसरी पर किसी तरह से जीत पाये। इतना ही नहीं, इनके मंत्रिमंडल के अधिकतर सदस्यों को जनता ने हार का मुंह दिखा दिया। जनता ने साफतौर पर कांग्रेस को चुनावों में पूरी तरह से नकार दिया। पिछले पांच वर्षों में प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने भ्रष्टाचार एवं कुशासन में नये–नये रिकॉर्ड बनाये और साथ ही अपने राजनैतिक लाभ के लिये समाज में दरार पैदा करने की कोशिश की। सिद्धारमैय्या सरकार न केवल अकर्मण्य एवं भ्रष्ट थी, बल्कि प्रदेश के विकास के लिये उसके पास कोई दृष्टि भी नहीं थी। लोग चुनावों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, ताकि कांग्रेस को इसके कुशासन की सजा दी जा सके और ऐसा हुआ भी। चुनावों में कांग्रेस को प्रदेश की जनता ने धूल चटा दी।

कांग्रेस–जद(एस) गठबंधन प्रदेश को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने में सक्षम नहीं है और दो हारे हुए दल मिलकर जनता के लिये विजय दिलाने वाली टीम नहीं बन सकते। यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे सब जानते हैं और इसलिए यह भाजपा कार्यकर्ताओं एवं नेतृत्व का दायित्व है कि प्रदेश को ऐसे अवसरवादी–सिद्धांतहीन गठबंधन से निजात दिलायें।

यह अत्यंत दुर्भाग्यजनक है कि जनादेश का विनम्रतापूर्वक सम्मान कर अपनी हार स्वीकारने की जगह कांग्रेस पुनः पिछले दरवाजे से सरकार में शामिल हो गई। भाजपा को सरकार बनाने से रोकने के लिये इसने जद(एस) को मुख्यमंत्री पद का प्रस्ताव देकर सरकार बना ली। यद्यपि जद(एस) केवल 37 सीटें प्राप्त कर सकी और कांग्रेस ने इसके विरुद्ध व्यापक प्रचार किया, कांग्रेस नेतृत्व ने सत्ता से चिपके रहने के लिए एक सिद्धांतहीन एवं अवसरवादी गठबंधन का जन्म दिया। जहां मात्र 37 सीटों के साथ जद(एस) मुख्यमंत्री की कुर्सी के साथ सरकार का नेतृत्व कर रही है, कांग्रेस जिसकी चुनावों में बुरी तरह हार हुई; इसे समर्थन देकर मंत्रिमंडल का बड़ा हिस्सा अपने जेब में डालने में सफल हुई है। इस प्रकार के सत्ताकेंद्रित गठबंधन से कांग्रेस की सत्ता की भूख और सिद्धांतहीन राजनैतिक चरित्र एक बार पुनः जनता के समक्ष उजागर हुआ है।

कांग्रेस इस बात पर संतोष कर सकती है कि किसी तरह से इसने एक अवसरवादी गठबंधन बनाकर भाजपा को कर्नाटक में सरकार बनाने से फिलहाल रोक लिया है। परन्तु इसे समझना चाहिए कि लोकतंत्र में जनता ही सबसे बड़ी निर्णायक होती है। वे कांग्रेस की सिद्धांतहीन राजनीति और अवसरवादी चरित्र को देख रहे हैं। प्रदेश की जनता कांग्रेस को एक बार पुनः पाठ पढ़ायेगी और इस बार हार और भी कड़वी होगी। भाजपा कार्यकर्ताओं को जन–जन के पास पहुंचकर इस अवसरवादी–सिद्धांतहीन गठबंधन के पोल खोलने होंगे तथा परफॉरमेंस एवं विकास की राजनीति के प्रति व्यापक जनसमर्थन तैयार करना पड़ेगा। कांग्रेस–जद(एस) गठबंधन प्रदेश को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने में सक्षम नहीं है और दो हारे हुए दल मिलकर जनता के लिये विजय दिलाने वाली टीम नहीं बन सकते। यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे सब जानते हैं और इसलिए यह भाजपा कार्यकर्ताओं एवं नेतृत्व का दायित्व है कि प्रदेश को ऐसे अवसरवादी–सिद्धांतहीन गठबंधन से निजात दिलायें। यह समय की मांग है कि हर भाजपा कार्यकर्ता जन–जन तक पहुंचे और आने वाले संघर्षों के लिये जनता का आशीर्वाद प्राप्त करे। ■

shivshakti@kamalsandesh.org

कांग्रेस के विरुद्ध है कर्नाटक का जनादेश: अमित शाह

कर्नाटक की जीत के साथ भारतीय जनता पार्टी ने दक्षिण भारत में भी जोरदार उपस्थिति दर्ज करा दी। गत 15 मई को आए कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और बहुमत से महज 7 सीटें दूर रह गई।

राज्य की 224 सदस्यीय विधानसभा के लिए 222 सीटों पर 12 मई को मतदान हुआ था। 104 सीटें जीतकर भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। राज्य में सत्तारूढ़ पार्टी कांग्रेस को बड़ा नुकसान हुआ और वह 78 सीटों पर सिमट गई। जद(एस) को 37 सीटों से संतोष करना पड़ा। उसकी सहयोगी बहुजन समाज पार्टी को एक सीट मिली। एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार जीता और एक सीट स्थानीय पार्टी केजीजेपी को मिली।

चुनाव परिणाम आते ही कांग्रेस स्वयं ही जद(एस) नेता श्री कुमारस्वामी के सामने मुख्यमंत्री बनाने का न्योता लेकर पहुंच गई। श्री कुमारस्वामी ने राज्यपाल श्री वजुभाई वाला को पत्र लिखकर कांग्रेसी समर्थन स्वीकारने की सूचना दी और बाद में मिलकर सरकार बनाने का दावा भी ठोक दिया। भाजपा नेता श्री बी.एस.येदियुरप्पा ने भी राज्यपाल से भेंट कर सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते सरकार बनाने का दावा प्रस्तुत कर दिया।

कर्नाटक के राज्यपाल श्री वजूभाई वाला ने 16 मई को भाजपा विधायक दल के नेता श्री बी. एस. येदियुरप्पा को राज्य में सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया और बहुमत साबित करने के लिए 15 दिन का समय दिया। कर्नाटक में सरकार बनाने के लिए भाजपा को न्योता देने के राज्यपाल के फैसले के खिलाफ कांग्रेस 16 मई की रात सर्वोच्च न्यायालय पहुंच गई। श्री येदियुरप्पा को शपथ लेने से रोक लगाने की मांग को सर्वोच्च न्यायालय ने अस्वीकार कर दिया।

17 मई को भाजपा नेता श्री बी. एस. येदियुरप्पा ने तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री पद की ईश्वर और किसानों के नाम पर शपथ ली।

कर्नाटक चुनाव रिजल्ट

पार्टी	सीटें
बहुजन समाज पार्टी	1
भारतीय जनता पार्टी	104
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	78
जनता दल (सेक्युलर)	37
अन्य	2
कुल	222

श्री वजूभाई वाला ने एक सादे समारोह में श्री येदियुरप्पा को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह में केंद्रीय मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर और श्री अनंत कुमार उपस्थित रहे।

18 मई को सर्वोच्च न्यायालय ने भाजपा के मुख्यमंत्री श्री बी. एस. येदियुरप्पा को बहुमत साबित करने के लिए राज्यपाल द्वारा दी गई 15 दिन की अवधि को घटाते हुए 24 घंटे कर दिया।

विकास यात्रा रौंदने नहीं देंगे: नरेंद्र मोदी

कर्नाटक चुनाव में भाजपा के प्रदर्शन को असामान्य और अभूतपूर्व करार देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भाजपा कर्नाटक की विकास यात्रा को किसी को रौंदने नहीं देगी। प्रधानमंत्री ने भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कर्नाटक की विजय असामान्य है, अभूतपूर्व है। इसके लिए वे पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता का आभार व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा कि यह जीत इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि ऐसी छवि बना दी गई थी कि भाजपा उत्तर भारत की पार्टी है, हिंदी भाषी क्षेत्र की पार्टी है। अब न गुजरात हिंदी भाषी है, न असम, न गोवा, न पूर्वोत्तर का ही कोई क्षेत्र हिंदी भाषी है। लेकिन लोगों में यह धारणा बनाने का प्रयास किया गया, एक झूठ फैलाया गया।

श्री मोदी ने कहा, इस प्रकार की विकृत सोच वाले लोगों को कर्नाटक की जनता ने झटका दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा हिंदुस्तान के हर क्षेत्र के लोगों और उनकी समस्याओं को सुलझाने के प्रति समर्पित पार्टी है, एक भारत, श्रेष्ठ भारत को समर्पित पार्टी है। प्रधानमंत्री ने कहा, भाजपा किसी को कर्नाटक की विकास यात्रा को रौंदने नहीं देगी। उन्होंने कहा कि कर्नाटक के उज्वल भविष्य के लिए भाजपा कहीं भी पीछे नहीं रहेगी।

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए श्री मोदी ने कहा कि आजादी के बाद इतने साल तक जो दल केंद्र में सत्ता में रहा हो, इतने वर्षों तक देश को चलाया हो, जिसमें इतने दिग्गज नेता रहे हो, क्या कोई सोच सकता था कि चुनाव जीतने, तुच्छ स्वार्थ के लिए भारत के संविधान, संघीय ढांचे पर वह चोट पहुंचाएगा ? उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य के बीच तनाव पैदा करने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि चुनाव में जीत-हार होती रहेगी, लेकिन देश के मूलभूत अधिष्ठानों पर चोट चिंता का विषय है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें इस बात का कई बार मलाल रहा कि उन्हें कुछ राज्यों की भाषा नहीं आती, लेकिन कर्नाटक की जनता ने भाषा के भेद को समाप्त किया और प्रचार के दौरान 45-47 डिग्री धूप में उनकी बातें ध्यान से सुनीं। कर्नाटक चुनाव में अच्छे प्रदर्शन के लिए प्रधानमंत्री ने भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह की रणनीति को सराहा। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में पार्टी कार्यकर्ताओं के परिश्रम को सौ-सौ सलाम।

कर्नाटक विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते सरकार बनाने के बाद मुख्यमंत्री श्री बी. एस. येदियुरप्पा ने 19 मई को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। श्री येदियुरप्पा ने विश्वासमत तो प्रस्तुत किया, लेकिन उस पर मतदान से पहले ही कांग्रेस-जद(एस) के अवसरवादी गठबंधन के कारण त्याग–पत्र देने की घोषणा कर दी।

23 मई को कांग्रेस–जदएस गठबंधन सरकार का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ। जद(एस) नेता श्री एचडी कुमारस्वामी ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। राज्यपाल वजुभाई वाला ने उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। वहीं, कांग्रेस के जी परमेश्वर ने भी उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

जब तक जिंदा हूं किसानों को समर्पित रहूंगा : येदियुरप्पा

बहुमत परीक्षण से पहले कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री बी. एस. येदियुरप्पा ने काफी भावुक भाषण दिया। श्री येदियुरप्पा ने कहा कि जब तक मैं जिंदा हूं, अन्नदाता किसान को पूरी तरह मदद करने को तैयार हूं। उन्होंने कहा कि हमें किसानों की समस्याओं को दूर करने का मौका नहीं मिला। उन्होंने कहा कि चुनाव में कांग्रेस और जद(एस) एक दूसरे के खिलाफ लड़े और बहुमत न मिलने पर सरकार बनाने के लिए एक हो गए। श्री येदियुरप्पा ने कांग्रेस–जद(एस) के इस गटबंधन को अवसरवादी बताया।

इसके साथ ही श्री येदियुरप्पा ने फिर से जनता के बीच जाने और चुनाव जीतकर आने की बात कही। उन्होंने कहा कि वे राज्य के हर इलाके में जाएंगे और जीतकर आएंगे। उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र में जनता ही मालिक है।

श्री येदियुरप्पा ने संबोधन के अंत में राज्य की जनता को आभार व्यक्त किया। संबोधन के अंत में उन्होंने इस्तीफे की घोषणा कर दी।

कांग्रेस कुशासन के खिलाफ जनादेश: अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 21 मई को नई दिल्ली स्थित भाजपा के केन्द्रीय कार्यालय में एक प्रेस वार्ता को संबोधित किया और कांग्रेस-जद(एस) गठबंधन को अपवित्र गठबंधन करार दिया।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि मैं भारतीय जनता पार्टी की ओर से सबसे पहले कर्नाटक की जनता का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि एक कठिन चुनावी समर में उन्होंने भाजपा को विजयी बनाया और भाजपा सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। उन्होंने कहा कि वोट प्रतिशत और सीटों की दृष्टि से भारतीय जनता पार्टी ने अपनी टैली को काफी इम्प्रूव किया है। उन्होंने कर्नाटक भाजपा के लाखों कार्यकर्ताओं का हृदय से धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने चुनाव में घर-घर जाकर भारतीय जनता पार्टी के दृष्टिकोण को जनता तक पहुंचाने का काम बखूबी अंजाम दिया।

श्री शाह ने कहा कि चुनाव से पहले कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी की केवल 40 सीटें थीं, अब हम 104 सीटों के साथ कर्नाटक में सबसे बड़े दल के रूप में उभरे हैं। हमारे वोट प्रतिशत में भी बहुत बड़ी वृद्धि हुई है, प्रत्यक्ष रूप से जनादेश भाजपा को मिला है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक विधानसभा का पूरा चुनाव हमने कांग्रेस की सिद्धारमैया सरकार के 5 साल के भ्रष्टाचार, कुशासन, तुष्टीकरण और वोट बैंक की राजनीति, बदहाल क़ानून-व्यवस्था, महिलाओं और दलितों के खिलाफ उत्पीड़न और किसानों की आत्महत्या के मुद्दे पर लड़ा था। उन्होंने कहा कि ये सारी चीजें एक विफल सरकार की परिचायक हैं। उन्होंने कहा कि एक ओर सिद्धारमैया सरकार में आजादी के बाद सबसे अधिक दलित उत्पीड़न की घटनाएं होती हैं।

कई लोग ऐसा दुष्प्रचार कर रहे हैं कि पूर्ण बहुमत न होने के बावजूद भारतीय जनता पार्टी ने सरकार बनाने का दावा क्यों किया? पूर्ण बहुमत किसी के पास नहीं था तो क्या फिर से चुनाव कराये जाते? 104 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते सरकार बनाने का दावा करने का पहला अधिकार भारतीय जनता पार्टी का था। यदि हम सरकार बनाने का दावा नहीं करते तो यह कर्नाटक की जनता के मैंडेट के खिलाफ होता।

महिलाओं के खिलाफ होने वाले उत्पीड़न में भी भारी वृद्धि होती है, 173% की दर से लगभग 3700 से अधिक किसान आत्महत्या को विवश होते हैं वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने कर्नाटक के विकास को गति देने के लिए आजादी के बाद सबसे अधिक आर्थिक सहायता मुहैया कराई गई और कई परियोजनाओं की शुरुआत हुई। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सिद्धारमैया सरकार की नाकामी और मोदी सरकार द्वारा कर्नाटक के विकास के लिए किये जा रहे कार्यों के आधार पर हम श्री येदुरप्पा के नेतृत्व में कर्नाटक विधानसभा चुनाव लड़े और हमें इस बात का आनंद है कि कर्नाटक की जनता ने हमें जनादेश दिया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि कर्नाटक का जनादेश कांग्रेस के विरुद्ध है और जनता दल सेक्युलर भी वहीं जीती, जहां भाजपा संगठन परंपरागत रूप से कमजोर है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक विधानसभा के चुनाव परिणाम एंटी-कांग्रेस मैंडेट है, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिद्धारमैया सरकार के आधे से अधिक मंत्री हार गए, मुख्यमंत्री खुद चुनाव हार गए और दूसरी सीट से वे बहुत ही कम मार्जिन से जीत पाए - यह कांग्रेस के कुशासन के खिलाफ कर्नाटक का जनादेश था।

श्री शाह ने कहा कि कई लोग ऐसा दुष्प्रचार कर रहे हैं कि पूर्ण बहुमत न होने के बावजूद भारतीय जनता पार्टी ने सरकार बनाने का दावा क्यों किया? उन्होंने कहा कि पूर्ण बहुमत किसी के पास नहीं था तो क्या फिर से चुनाव कराये जाते? उन्होंने कहा कि 104 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते सरकार बनाने का दावा करने का पहला अधिकार भारतीय जनता पार्टी का था। यदि हम सरकार बनाने का दावा नहीं करते तो यह कर्नाटक की जनता के मैंडेट के खिलाफ होता।

श्री शाह ने कहा कि जेडी(एस) का पूरा चुनाव प्रचार अभियान भी कांग्रेस और सिद्धारमैया सरकार की नाकामियों के खिलाफ था। उन्होंने कहा कि जेडी(एस) ने जहां-जहां भी चुनाव जीता है, एंटी-कांग्रेस मैंडेट के बल पर ही जीता है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक के विधान सभा चुनाव परिणाम से स्पष्ट है कि जनता ने कांग्रेस को नकार दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को जो भी हरा सकता था, कर्नाटक

की जनता ने उसे वहां से जिताया है। उन्होंने कहा कि हम मैजिक फिगर से सिर्फ 7 सीटें पीछे रह गए, हम 13 सीटें नोटा (NOTA) से भी कम मार्जिन से हारे, ऐसी 6 सीटें तो केवल बेंगलुरु में ही थी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आज जब कांग्रेस और जेडी (एस) सरकार बनाने की कवायद कर रही है तो आखिर वे किस बात का जश्न मना रहे हैं? उन्होंने कहा कि कांग्रेस-जेडी (एस) सरकार बनने से कर्नाटक की जनता जश्न नहीं मना रही है, जश्न केवल कांग्रेस और जेडी (एस) मना रही है। उन्होंने कांग्रेस से सवाल करते हुए कहा कि आखिर कांग्रेस किस बात का जश्न मना रही है - 122 से 78 सीटों पर सिमट कर रह जाने का जश्न मना रही है, मुख्यमंत्री की हार का जश्न मना रही है। आधे से ज्यादा मंत्रियों की हार का जश्न मना रही है या 'पीपीपी' अर्थात पंजाब, पुदुच्चेरी और परिवार तक सिमट रह जाने का जश्न मना रही है? उन्होंने कहा कि जेडी (एस) को भी स्पष्ट करना चाहिए कि वह महज 37 सीटें जीतने का जश्न मना रही है या 80% सीटों पर अपनी जमानत जब्त हो जाने का जश्न मना रही है?

श्री शाह ने कहा कि चुनाव से कुछ समय पहले ही कांग्रेस को पता चल गया था कि वह कर्नाटक में चुनाव हार रही है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने लोकतंत्र की सभी मर्यादाओं को तार-तार करते हुए किसी भी तरह चुनाव जीतने का प्रपंच रचा था, लेकिन कांग्रेस इसके बावजूद इसमें सफल नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने क्षेत्रवाद, भाषा, अलग झंडा, हिंदू धर्म में अलगाव, लिंगायत को अलग धर्म की मान्यता, SDPI जैसी घोर अराजक और देशद्रोही गतिविधियों में लिप्त पार्टी के साथ गठबंधन, भाजपा के खिलाफ दुष्प्रचार, धन-बल और फेक आईडी कार्ड की साजिश रचकर चुनाव जीतने का षड्यंत्र रचा था। उन्होंने कहा कि चुनाव प्रचार के दौरान राहुल गांधी ने झूठा प्रचार किया कि केंद्र सरकार ने एससी/एसटी एक्ट को ख़त्म कर दिया है, जबकि यह कोई सोच भी नहीं सकता। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के चुनाव क्षेत्र में छापे में 10 विधानसभा में चुनाव करवाने लायक धन बरामद किया गया और इसके लिए उनके एक मंत्री पर केस भी दायर हुआ। उन्होंने कहा कि एक चुनाव क्षेत्र में एक घर से फर्जी आईडी कार्ड बनाने की फैक्ट्री बरामद हुई - हजारों फेक आईडी कार्ड, प्रिंटर, फर्जी मतदाता रजिस्टर भी बरामद हुए और उनके विधायक एवं काउंसिलर पर केस भी फ़ाइल हुई। उन्होंने कहा कि आज ही मीडिया में खबर आई है कि कचरे के ढेर से VVPAT मशीनें बरामद हुई है। उन्होंने कहा कि इतना अलोकतांत्रिक काम करने के बावजूद कांग्रेस 122 से घट कर 78 पर सिमट गई और तिस पर कांग्रेस कहती है कि हम चुनाव जीते।

श्री शाह ने कहा कि कर्नाटक के जनादेश के खिलाफ जाकर कांग्रेस ने जेडी (एस) का समर्थन किया है और जनादेश के खिलाफ जाकर ही जेडी (एस) ने कांग्रेस से समर्थन लिया है, वास्तव में कर्नाटक के जनादेश को अपमानित करने वाली कांग्रेस-जेडी (एस) गठबंधन एक अपवित्र गठबंधन है। उन्होंने कहा कि जनता भलीभांति जानती है कि चुनाव प्रचार के दौरान कुमारस्वामी ने कांग्रेस के लिए कैसे-कैसे बयान दिए थे और देवगौड़ा जी के लिए राहुल गांधी ने तथा राहुल गांधी ने देवगौड़ा जी के लिए क्या-क्या कहा था।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी का विजय रथ घूमता-घूमता दक्षिण में प्रवेश कर गया है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से समग्र देश की जनता ने मोदी सरकार की विकास यात्रा और सुशासन के प्रति जनादेश देते हुए भारतीय जनता पार्टी को अपना प्यार और समर्थन दिया है, उसी तरह से कर्नाटक की जनता ने भी भाजपा को अपना आशीर्वाद दिया है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक विधान सभा चुनाव कई मायनों में एक

अच्छा चुनाव रहा, क्योंकि कांग्रेस की लोकतांत्रिक संस्थाओं में श्रद्धा बढ़ गई है, उन्हें अचानक से सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग और ईवीएम अच्छा लगने लगा है, उन्हें आधी-अधूरी जीत भी अच्छी लगने लगी। हम इस अच्छाई का स्वागत करते हैं। इसके साथ-साथ हम यह भी चाहते हैं कि जब कांग्रेस चुनाव हारे, तब भी वह इन सारी चीजों को याद रखे, वह ईवीएम को भी याद रखे, चुनाव आयोग को भी याद रखे और सुप्रीम कोर्ट को भी याद रखें। साथ ही आशा है कि अब वे सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद जज के खिलाफ इम्पीचमेंट मोशन लेकर नहीं आयेंगे।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि निस्संदेह भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2019 के लोक सभा चुनाव में 2014 से भी अधिक बहुमत के साथ जीतकर आयेगी और देश में विकास के एक नए युग की शुरुआत को आगे बढ़ायेगी। ■

'हमने हमेशा नॉर्थ ईस्ट के अधिकारों को स्वीकार किया है'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 20 मई को श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी (असम) में नार्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक अलायंस (नेडा) के तीसरे बृहद बैठक को संबोधित किया और इस बात की खुशी जताई कि नेडा नार्थ ईस्ट की आवश्यकताओं को पूरा करने और इस क्षेत्र की समस्याओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल रहा है।

श्री शाह ने कहा कि जिस उद्देश्य के साथ हमने नेडा की स्थापना की थी, आज नेडा उस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काफी तेज गति से अग्रसर है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने आजादी के बाद से हमेशा पूर्वोत्तर को केवल बहुमत जुटाने का साधन माना, जबकि श्री अटल बिहारी वाजपेयी की एनडीए सरकार हो या फिर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भाजपा सरकार, हमने हमेशा नॉर्थ ईस्ट के अधिकारों को स्वीकार किया है। उन्होंने कहा कि देश के संसाधनों पर जितना अधिकार देश के बाकी राज्यों का है, उससे भी ज्यादा अधिकार पूर्वोत्तर के राज्यों का है, यह भारतीय जनता पार्टी तत्वतः मानती है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि नेडा केवल पॉलिटिकल अलायंस नहीं है, यह केवल एक रीजनल अलायंस भी नहीं है, बल्कि यह पॉलिटिकल अलायंस और रीजनल अलायंस के साथ-साथ एक जीयो कल्चरल अलायंस भी है, यह पूरे नॉर्थ ईस्ट को सांस्कृतिक रूप से एकजुट करने का एक मंच है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक और भोगौलिक विविधता से भरे नॉर्थ-ईस्ट को एकजुट रखते हुए पूर्वोत्तर का विकास करना प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए सरकार की प्रमुख प्राथमिकता है।

श्री शाह ने कहा कि आज नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए जो संसाधन मोदी सरकार की ओर से जाता है, वह पूर्वोत्तर के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि पहले जो पैसे नॉर्थ-ईस्ट के विकास के लिए भेजे जाते थे, वह कांग्रेसी सरकारों के भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते थे, जबकि आज यदि केंद्र से विकास के लिए 100 रुपये भेजे जाते हैं तो भाजपा और एनडीए की सरकारें 115 रुपये खर्च करती हैं। उन्होंने कहा कि मेरा यह स्पष्ट मानना है कि आने वाले समय में पूर्वोत्तर का यह क्षेत्र राष्ट्रीय विकास दर में सबसे बड़ा योगदान देने वाला है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी के वक्त नॉर्थ-ईस्ट की जीडीपी देश में सर्वाधिक थी, लेकिन कांग्रेस सरकारों की अनदेखी के कारण यह क्षेत्र विकास में पिछड़ता चला गया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक बार फिर से नॉर्थ-ईस्ट देश के विकास में अपनी महती भूमिका निभाने की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि केवल अरुणाचल प्रदेश में स्टेट फंड 900 करोड़ रुपये से 1600 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है, यह उदाहरण है कि मोदी जी के दिखाए रास्ते पर यदि चला जाए तो काम किस तरह से हो सकता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि हमने बांग्लादेशी घुसपैठ, शस्त्रों की तस्करी, म्यांमार की सीमा से हो रहे आतंकवाद के खात्मे में बड़ी सफलता अर्जित की है। उन्होंने कहा कि नेडा और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में हम नॉर्थ ईस्ट में भ्रष्टाचारविहीन शासन देने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा कि बंगलादेश के साथ लैंड बाउंड्री एग्रीमेंट होने से नॉर्थ ईस्ट के

विकास को एक नई दिशा मिली है। साथ ही, पूर्वोत्तर की सीमा से सटे बांग्लादेश, भूटान और म्यांमार के साथ अच्छे संबंध स्थापित करके भी भारतीय जनता पार्टी की मोदी सरकार ने एक्ट ईस्ट पॉलिसी का मैक्सिमम फायदा नॉर्थ ईस्ट के राज्यों को पहुंचाने का प्रयास किया है।

श्री शाह ने कहा कि नॉर्थ ईस्ट के सर्वांगीण विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भाजपा-नीत एनडीए सरकार ने काफी अच्छा काम किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की यूपीए सरकार के 13वें वित्त आयोग की तुलना में 14वें वित्त आयोग में मोदी सरकार ने नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए 258% अधिक धनराशि का आवंटन किया है। उन्होंने कहा कि 13वें वित्त आयोग में नॉर्थ ईस्ट को 87,628 करोड़ रुपये मिले थे, जबकि 14वें वित्त आयोग में मोदी सरकार ने नॉर्थ ईस्ट के लिए 3,13,375 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया है। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त विभिन्न परियोजनाओं और विकास कार्यों के लिए दी जाने वाली राशि में भी मोदी सरकार ने 73% की बढ़ोतरी की है। उन्होंने कहा कि पहले जहां 13वें वित्त आयोग में इसके लिए महज 2,53,563 करोड़ रुपये दिए जाते थे, वहीं मोदी सरकार ने इसे बढ़ाकर 4,39,786 करोड़ रुपये कर दिया है।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, श्री मोरारजी देसाई के बाद एनईसी की बैठक में भाग लेने वाले शायद पहले प्रधानमंत्री हैं, इसी से उनकी पूर्वोत्तर के विकास की प्राथमिकता स्पष्ट हो जाती है। उन्होंने कहा कि हर 15 दिन में केंद्र सरकार का कोई-न-कोई मंत्री नॉर्थ ईस्ट में जरूर होते हैं। पूर्वोत्तर के विकास की मॉनिटरिंग प्रधानमंत्री जी स्वयं करते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर के युवाओं में उद्यमशीलता बढ़ाने के लिए पूर्वोत्तर उद्यम कोष्ठ की रचना की गई है, आईआईएम शिलांग में एपीजे अब्दुल कलाम सेंटर की स्थापना की गई है। ब्रह्मपुत्र रीजनल स्टडी सेंटर की स्थापना कर इसे गुवाहाटी सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी के साथ जोड़ कर विकास को एक नया आयाम दिया गया है और डॉ. डी. बरुआ कैंसर हॉस्पिटल का निर्माण कर इस क्षेत्र में आरोग्य की दिशा में भी ख़ास पहल की गई है। उन्होंने कहा कि ऑफ़न रोड को प्रायोरिटी के साथ कनेक्टिविटी लिंक बनाने का काम जोरों पर है, जेएनयू में पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए अलग से छात्रावास का निर्माण किया गया है। द्वारका (नई दिल्ली) में नार्थ ईस्ट कल्चरल इनफॉर्मेशन सेंटर स्थापित किया गया है, मणिपुर में स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी की स्थापना की गई है, साथ ही पूर्वोत्तर के राज्यों के बीच एयर कनेक्टिविटी पर भी काफी काम किया गया है। उन्होंने कहा कि सिक्किम भारत का सबसे पहला जैविक खेती करने वाला राज्य बना है, जिससे पूर्वोत्तर के किसानों की आय को बढ़ाने के लिए बहुत बड़ा कार्य हुआ है। उन्होंने कहा कि सिक्किम भारत का पहला ओपन डिफेकेशन फ्री स्टेट बना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के कर कमलों द्वारा आईआईटी गुवाहाटी का उद्घाटन किया गया है, इससे युवाओं के लिए बहुत बड़ी संभावना बनने वाली है। उन्होंने कहा कि त्रिपुरा से बांग्लादेश को जोड़ने वाली रेल लाइन की स्वीकृति देकर केंद्र की भाजपा सरकार ने नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने नॉर्थ ईस्ट की दूरसंचार कनेक्टिविटी के लिए लगभग 5,336 करोड़ रुपये की योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि 5576 मेगावाट की कुल 16 हाइड्रो पावर योजनाओं को गति देने का काम भी भारतीय जनता पार्टी की नरेन्द्र मोदी सरकार ने किया है। उन्होंने कहा कि भारत, म्यांमार और थाईलैंड के बीच प्रस्तावित 3200 किलोमीटर की हाईवे योजना पूर्वोत्तर भारत के लिए इन्वेस्टमेंट लाने का एक बहुत बड़ा रास्ता खोलने वाला है। उन्होंने कहा कि ब्रह्मपुत्र पर बने भूपेन हजारिका ब्रिज के माध्यम से पूरी दुनिया में श्री भूपेन हजारिका का नाम पहुंचाने का काम किया गया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने बांस को वृक्ष की श्रेणी से घास की श्रेणी में तब्दील कर राष्ट्रीय बांस मिशन के माध्यम से ट्राइबल भाई-बहनों के लिए रोजगार के असीमित द्वार खोल दिए हैं। इससे लगभग एक लाख करोड़ रुपये का बिजनेस जेनरेट हो सका है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार ने नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं, लेकिन यह केवल एक शुरुआत भर है।

कांग्रेस ने आजादी के बाद से हमेशा पूर्वोत्तर को केवल बहुमत जुटाने का साधन माना, जबकि श्री अटल बिहारी वाजपेयी की एनडीए सरकार हो या फिर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भाजपा सरकार, हमने हमेशा नॉर्थ ईस्ट के अधिकारों को स्वीकार किया है। देश के संसाधनों पर जितना अधिकार देश के बाकी राज्यों का है, उससे भी ज्यादा अधिकार पूर्वोत्तर के राज्यों का है, यह भारतीय जनता पार्टी तत्वतः मानती है।

श्री शाहने कहा कि नॉर्थ ईस्ट के विकास के हमारे रोडमैप में नेडा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में हम नेडा का युवा मंच एवं महिला मंच भी स्थापित करना चाहते हैं, ताकि पूर्वोत्तर की दूसरी पीढ़ी को भी नॉर्थ-ईस्ट की महान सांस्कृतिक विरासत के साथ जोड़ते हुए क्षेत्र के विकास में उनके योगदान का लाभ उठाया जाए। इतना ही नहीं, हम हर साल नेडा के माध्यम से खेल प्रतियोगिता का भी आयोजन करना चाहते हैं ताकि विश्व-स्तर पर भारत खेल की दुनिया में आगे बढ़ सके। उन्होंने कहा कि हम आरोग्य और प्राइमरी एजुकेशन पर भी तेज गति से काम कर रहे हैं और योजनाओं को इम्प्लीमेंट कर रहे हैं। उन्हें नेडा के सभी सदस्यों को आश्वस्त करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी और केंद्र की मोदी सरकार उनके सभी सुझावों पर संज्ञान लेते हुए इस पर अमल करेगी और पूर्वोत्तर के विकास के लिए सदैव तत्पर रहेगी। ■

भाजपा की आत्मा बूथ कार्यकर्ताओं के भीतर बसती है: अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 13 मई को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम, बम्बोलिम (गोवा) आयोजित गोवा भाजपा बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया और कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिकर के नेतृत्व में गोवा को देश के मॉडल स्टेट के रूप में प्रतिस्थापित करने के लिये हम कृतसंकल्पित हैं।

श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की आत्मा बूथ कार्यकर्ताओं के भीतर बसती है। उन्होंने कहा कि भले ही बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन दूसरी अन्य पार्टियों के लिए जरूरी न हो, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के केंद्र बिंदु में पार्टी के बूथ कार्यकर्ता ही हैं। उन्होंने कहा कि मेरे राजनीतिक जीवन की शुरुआत भी एक बूथ कार्यकर्ता के रूप में ही हुई थी। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जिसने एक बूथ स्तर पर काम करने वाले कार्यकर्ता को दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बना कर सम्मान दिया। इतना ही नहीं, दूसरी किसी भी पार्टी में यह संभव नहीं कि चाय बेचने वाले एक गरीब का बेटा भारत के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित कर गौरवशाली भारत के पुनर्निर्माण के लिए कटिबद्ध होकर काम करे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि जब भारतीय जन संघ की स्थापना हुई तो पार्टी को सुचारू रूप से चलाने के लिए दो सिद्धांतों का निर्धारण किया गया था, पहला - विचारधारा के आधार पर आगे बढ़ना और दूसरा संगठन के आधार पर पार्टी को विस्तार देना। यही दो चीजें हमें सभी दलों से अलग करती हैं। उन्होंने कहा कि जन संघ से आज की भारतीय जनता पार्टी की यात्रा कठिन और लंबी जरूर रही है, लेकिन आज हम जहां पहुंचे हैं, इसका श्रेय भारतीय जनता पार्टी के संगठन और बूथ कार्यकर्ताओं को ही जाता है। उन्होंने कहा कि न जाने कितने झंझावातों से लड़ते हुए, असहनीय जुल्मों को सहते हुए हम आगे बढ़ते रहे, लेकिन हम बंटे नहीं, टूटे नहीं और संगठन एवं विचारधारा के आधार पर निरंतर आगे बढ़ते रहे।

श्री शाह ने कहा कि 10 सदस्यों के साथ शुरू हुई पार्टी आज 11 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के लगभग 1,600 विधायक हैं, 330 से अधिक सांसद हैं और देश के 20 राज्यों में पार्टी की सरकार चल रही है, उन्होंने कहा कि आज सबसे अधिक जिला पंचायत के सदस्य और काउंसिलर भारतीय जनता पार्टी के ही हैं। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद पहली बार यदि किसी गैर कांग्रेसी सरकार को पूर्ण बहुमत के साथ सरकार चलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने गोवा प्रदेश भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं को हृदय से साधुवाद देते हुये इस बात की सराहना की कि गोवा भारतीय जनता पार्टी ने राज्य के 16 हजार से अधिक बूथों में 10-10 कार्यकर्ताओं के रजिस्ट्रेशन का काम पूरा कर लिया है। उन्होंने कहा कि यह आनंद की बात है कि राज्य के 40 में से 36 विधानसभा में शत-प्रतिशत बूथों की रचना का काम पूरा कर लिया गया है और यह रेशियो बाकी अन्य राज्यों से भी अधिक है।

गोवा के मुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री मनोहर परिकर के व्यक्तित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए श्री शाह ने कहा कि श्री परिकर जब देश के रक्षा मंत्री थे, उस वक्त पाक प्रेरित

आतंकवादियों ने सेना के हमारे जवानों पर कायराना हमला किया था, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व और सेना के जवानों की अदम्य वीरता के बल पर श्री परिकर ने सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देने का काम किया था। उन्होंने कहा कि इस एक सर्जिकल स्ट्राइक ने पूरे दुनिया का भारत को देखने का नजरिया बदल दिया और भारत एक मजबूत, सशक्त एवं निर्णायक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि मोदी सरकार ने देश के एक बहुत बड़े हिस्से को पहली बार आजादी का अनुभव कराया है। उन्होंने कहा कि आजादी के 70 साल बाद भी देश के लगभग 50 करोड़ से अधिक लोगों के पास अपना बैंक अकाउंट नहीं था। लगभग 10 करोड़ परिवारों में शौचालय नहीं थे और 19 हजार गांव अंधेरे में जीने को विवश थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने विगत चार सालों में 30 करोड़ से अधिक लोगों के जन-धन एकाउंट खोले हैं, बिजली से वंचित देश

गोवा भारतीय जनता पार्टी ने राज्य के 16 हजार से अधिक बूथों में 10-10 कार्यकर्ताओं के रजिस्ट्रेशन का काम पूरा कर लिया है। राज्य के 40 में से 36 विधानसभा में शत-प्रतिशत बूथों की रचना का काम पूरा कर लिया गया है और यह रेशियो बाकी अन्य राज्यों से भी अधिक है।

के सभी 19 हजार गांवों को रोशन किया है, सात करोड़ से अधिक घरों में शौचालय पहुंचाया है, लगभग चार करोड़ घरों में गैस का कनेक्शन दिया है, लगभग 11 करोड़ लोगों को मुद्रा ऋण के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराये हैं। एक करोड़ गरीबों को रहने के लिए घर दिया है और लगभग 18 करोड़ लोगों को केवल 12 रुपये के प्रीमियम पर दो लाख का सुरक्षा बीमा उपलब्ध कराया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने कई गांवों को ऑप्टिक फाइबर से जोड़ा है। साथ ही 11 करोड़ किसानों को स्वायल हेल्थ कार्ड भी उपलब्ध कराये गए हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने 'आयुष्मान भारत' योजना के तहत देश के 10 करोड़ परिवारों अर्थात् लगभग 50 करोड़ लोगों को पांच लाख रुपये का बीमा फ्री ऑफ़ कॉस्ट देने का काम किया है।

श्री शाह ने कहा कि गोवा की परिकर सरकार भी मोदी सरकार की ही तर्ज पर गोवा के विकास के लिए अहर्निश काम कर रही है। उन्होंने कहा कि गोवा में दीनदयाल स्वास्थ्य सेवा योजना में 443 बीमारियों को कवर कर ढाई लाख रुपये तक का बीमा दिया गया है। सीपीआर में लगभग 32 हजार करोड़ रुपये का निवेश कर लगभग 10 हजार लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है, दयानंद सामाजिक सुरक्षा योजना की शुरुआत की गई है। गोवा-तिरुपति को रेलमार्ग से जोड़ा गया है और उत्तरी एवं दक्षिणी गोवा के बीच कनेक्टिविटी के लिए केबल ब्रिज बनाने की शुरुआत की गई है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रिक्स सम्मेलन को गोवा में आयोजित करके गोवा को अंतर्राष्ट्रीय टूरिस्ट डेस्टिनेशन के रूप में प्रतिस्थापित करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि 13वें वित्त आयोग में गोवा को केंद्र की सोनिया-मनमोहन की सरकार ने जहां केवल 5,098 करोड़ रुपये दिए थे, वहीं मोदी सरकार ने 14वें वित्त आयोग में गोवा के लिए 15,667 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की है जो कांग्रेस की यूपीए सरकार की तुलना में लगभग 10 हजार करोड़ रुपये अधिक है। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त मुद्रा बैंक योजना से राज्य के लगभग सवा लाख लोगों को स्वरोजगार के अवसर दिए गए हैं, अमृत मिशन के तहत 105 करोड़, स्मार्ट सिटी के लिए 108 करोड़, पर्यटन के विकास के लिए 100 करोड़, हवाई अड्डे के विकास के लिए 400 करोड़, एक ब्रिज के डेवलपमेंट के लिए 450 करोड़ एवं दो केबल ब्रिज के निर्माण के लिए लगभग 14 हजार करोड़ रुपये अलग से गोवा को दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि कुल मिलाकर मोदी सरकार ने गोवा को विभिन्न परियोजनाओं के लिए अलग से लगभग 16 हजार करोड़ रुपये की राशि दी है। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता इन सभी तथ्यों को लेकर राज्य की जनता के बीच जाएं। उन्होंने कहा कि कोर्ट केस के कारण गोवा में माइंस सेक्टर में भी समस्या आई है, उसका भी कुछ ही समय में कोर्ट के ही माध्यम से अच्छा रास्ता निकाल लिया जाएगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

श्री शाह ने कहा कि गोवा का विकास मोदी सरकार की प्राथमिकता है और यह हमारा दायित्व बनता है कि हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री मनोहर पर्रिकर के नेतृत्व में गोवा को एक मॉडल स्टेट के रूप में डेवलप करने के लिए एकजुट हो जाएं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से वादा किया कि जब मनोहर पर्रिकर जी स्वस्थ होकर गोवा लौटेंगे तो वे खुद उनके स्वागत के लिए एक बार फिर से गोवा आयेंगे।

भाजपा अध्यक्ष ने गोवा भाजपा के कार्यकर्ताओं को लक्ष्य देते हुए कहा कि 2019 के लोक सभा चुनाव में तो हमें गोवा की दोनों सीटों पर भाजपा का परचम लहराना ही है। साथ ही आगामी विधान सभा चुनाव में हमें 40 में से 35 से अधिक सीट जीतकर राज्य में से अस्थिरता के माहौल को सदा के लिए ख़त्म करना है। उन्होंने कहा कि 2014 से देश में हुए लगभग सभी चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को जीत मिली है और कर्नाटक में भी भारतीय जनता पार्टी भारी बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है, इसमें कोई संशय नहीं है। ■

एक करोड़ 10 लाख हुई 'अटल पेंशन योजना' के सदस्यों की संख्या

अटल पेंशन योजना (एपीवाई) के 3 साल पूरे होने पर इस स्कीम के सदस्यों की संख्या 1 करोड़ का आंकड़ा पार कर गई है। गौरतलब है कि एपीवाई का शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 9 मई, 2015 को कोलकाता में आयोजित एक समारोह में किया था। वर्तमान में इस योजना के सदस्यों की संख्या कुल मिलाकर 1.10 करोड़ है।

भारत सरकार द्वारा देश के नागरिकों के लिए घोषित की गई गारंटीड पेंशन वाली इस स्कीम अर्थात अटल पेंशन योजना के तहत असंगठित क्षेत्र के उन कामगारों पर फोकस किया जाता है, जिनकी हिस्सेदारी कुल श्रम बल में 85 प्रतिशत से भी अधिक है। अटल पेंशन योजना के तहत 60 साल की उम्र पूरी होने पर प्रति माह 1000 रुपये या 2000 रुपये अथवा 3000 रुपये या 4000 रुपये अथवा 5000 रुपये की गारंटीड न्यूनतम पेंशन मिलेगी जो सदस्यों द्वारा किए जाने वाले अंशदान पर निर्भर करेगी। संबंधित सदस्य की पत्नी/पति भी पेंशन पाने का हकदार है और नामित व्यक्ति को संचित पेंशन राशि दी जाएगी।

अटल पेंशन योजना की लांचिंग के तीन साल पूरे होने के अवसर पर पेंशन कोष नियामक विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग के सहयोग

से देश भर में 'एपीवाई निर्माण दिवस' के नाम से एक व्यापक पहुंच अभियान आयोजित किया, ताकि बैंकों और डाक विभाग द्वारा एपीवाई में नामांकन में वृद्धि की जा सके।

एपीवाई के तहत ग्राहक आधार कई गुना बढ़कर वर्तमान स्तर पर पहुंचा है और एपीवाई की पेशकश सभी बैंकों और डाकघरों द्वारा की जाती है। अब तक अटल पेंशन योजना के तहत 3950 करोड़ रुपये का अंशदान एकत्र हुआ है। इस योजना ने अपने शुभारंभ से लेकर मार्च 2018 तक लगभग 9.10 प्रतिशत का सीएजीआर सृजित किया है। ■

पूर्वोत्तर को पश्चिमी तट से जोड़ने वाली पार्सल कार्गो एक्सप्रेस ट्रेन का परिचालन शुरु

पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए संपर्क सुविधा उपलब्ध कराने तथा इस क्षेत्र के स्थानीय उद्योगों को सशक्त बनाने की केंद्र सरकार की प्राथमिकता के अनुरूप पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे ने पूर्वोत्तर क्षेत्र को पश्चिमी तट से जोड़ने वाली पार्सल कार्गो ट्रेन का परिचालन शुरू कर दिया है। यह ट्रेन एक महीने में दो बार चलेगी। इसे 6 वर्ष के अनुबंध पर रेलवे से पट्टे पर लिया गया है।

यह ट्रेन असम के न्यू गुवाहाटी से महाराष्ट्र के कल्याण के बीच चलेगी। बीच रास्ते में यह न्यू जलपाईगुड़ी और कलुमना गुड्स शेड में रूकेगी। इस ट्रेन के जरिये किसान चाय, सुपारी, अनानास, जूट, बागवानी उत्पाद और बेंत के फर्नीचर जैसे अपने उत्पादों की मुम्बई, बैंगलुरू, नागपुर और पुणे आदि जगहों के खुदरा बाजारों में मार्केटिंग कर सकेंगे।

इस पहल से न सिर्फ पूर्वोत्तर क्षेत्र के स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि अकुशल श्रमिकों सहित स्थानीय युवाओं को रोजगार के टिकाउ अवसर भी प्राप्त होंगे। पार्सल कार्गो ट्रेन रेलवे के संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव बनाए बिना व्यवसाय का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। 6 वर्षों के अनुबंध पर पट्टे पर ली गई यह ट्रेन रेलवे के लिए खासा राजस्व भी अर्जित करेगी।

इस ट्रेन के माध्यम से प्रति इकाई सामान ढुलाई की लागत सड़क मार्ग से भेजे जाने वाले खर्चे की तुलना में काफी कम होगी। माल ढुलाई का खर्च कम होने से ट्रांसपोर्टरों के साथ ही उपभोक्ताओं को भी इसका फायदा मिलेगा। एक अकेली ऐसी ट्रेन 52 ट्रकों के बराबर सामान ढ़ो सकती है। इससे कार्बन का उत्सर्जन कम होगा जो हरित भारत के निर्माण में योगदान करेगा और साथ ही ईंधन के आयात के मामले में विदेशी मुद्रा की बचत सुनिश्चित करेगा। कई अन्य क्षेत्रीय रेलवे ने भी राउंड ट्रिप के लिए पार्सल कार्गो ट्रेन पट्टे पर दिए जाने की पहल की है। ■

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 1333 परियोजनाएं पूर्ण या क्रियान्वित की जा रही है

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 50,626 करोड़ रुपयों की 1333 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं या क्रियान्वित की जा रही है/निविदा चरण में हैं। दरअसल, अब तक चुने गए 99 स्मार्ट सिटी में से 91 स्मार्ट सिटी में एसपीवी (स्पेशल पर्पस विहिकल्स) शामिल हो चुके हैं। 9 स्मार्ट सिटी अहमदाबाद, राजकोट, वडोदरा, विशाखापट्टनम, भोपाल, पुणे, काकिनडा, सूरत और नागपुर में एकीकृत सिटी कमान और नियंत्रण कक्ष (आईसीसीसी) स्थापित किए जा चुके हैं। 14 और स्मार्ट सिटी में कार्य प्रगति पर है और 32 स्मार्ट सिटी निविदा चरण में हैं।

चार स्मार्ट सिटी में 228 करोड़ रुपये की लागत से स्मार्ट सड़क परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं और 40 स्मार्ट सिटी में 5,123 करोड़ रुपये की परियोजनाएं क्रियान्वयन/निविदा के चरण में हैं। 6 स्मार्ट सिटी में स्मार्ट सौर परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं जबकि 49 स्मार्ट सिटी में परियोजनाएं क्रियान्वयन/निविदा के चरण में हैं। 6 स्मार्ट सिटी में स्मार्ट जल परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं, जबकि 43 स्मार्ट सिटी में परियोजनाएं क्रियान्वयन/निविदा के चरण में हैं। 13 स्मार्ट सिटी में 734 करोड़ रुपये की निजी-सरकारी साझेदारी परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं जबकि 52 स्मार्ट सिटी में 7,753 करोड़ रुपये की परियोजनाएं क्रियान्वयन/निविदा के चरण में हैं। इसके अलावा, 13 स्मार्ट सिटी में 107 करोड़ रुपये की लागत से विरासत संरक्षण, जल घाट विकास, सार्वजनिक स्थल विकास जैसी अन्य अहम परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं और 5,865 करोड़ रुपये की परियोजनाएं क्रियान्वयन/निविदा के चरण में हैं।

जनवरी, 2018 में 9 स्मार्ट सिटी के साथ ही स्मार्ट सिटी का चुनाव विभिन्न चरणों में पूरा हो चुका है। दरअसल, किसी शहर के स्मार्ट सिटी के रूप में चयन के बाद वहां स्पेशल पर्पस विहिकल शुरू करने, परियोजना प्रबंधन सलाहकार की नियुक्ति, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने और निविदा के बाद काम सौंपने में 12 से 18 महीने लग जाते हैं।

स्वच्छ भारत मिशन (शहरी)

केंद्र सरकार द्वारा राज्यों को कुल 6,592 करोड़ रुपये जारी किए हैं। कुल 48.67 लाख एकल परिवार शौचालयों एवं 3.3 लाख समुदाय/सार्वजनिक शौचालय (सीटी/पीटी) सीटों का पहले ही निर्माण किया जा चुका है और 8.3 लाख एकल शौचालय निर्माणाधीन हैं। अब तक 2679 नगरों ने खुद को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया है एवं तीसरे पक्ष प्रमाणीकरण के बाद 2,133 नगरों/ यूएलबी को खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है। 62,436 शहरी वार्डों को ठोस अपशिष्ट को 100 प्रतिशत घर घर जाकर संग्रह करने की योजना के तहत कवर किया गया है, जबकि अपशिष्ट से कंपोस्ट की कुल प्राप्ति 145 कार्यशील संयंत्रों से 13.11 लाख टीपीए है तथा 65 लाख टीपीए पर कार्य प्रगति पर है। अपशिष्ट से लगभग 88 मेगावाट ऊर्जा का उत्पादन किया जा रहा है और अपशिष्ट से मेगावाट के ऊर्जा सृजन के 412 संयंत्रों पर कार्य प्रगति पर है।

डीएवाई-एनयूएलएम

केंद्र सरकार द्वारा इस मिशन के तहत अब तक 1907.5 करोड़ रुपये जारी किये हैं। इस मिशन का विस्तार सभी वैधानिक कस्बों (टाउन) में कर दिया गया है। इस मिशन की शुरुआत से लेकर अब तक 6,36,956 लाभार्थियों के लिए रोजगार सृजित हुए हैं। लगभग 11 लाख शहरी गरीबों को कौशल प्रशिक्षण दिया गया है, ताकि उनकी रोजगार क्षमता बेहतर हो सके। कुल मिलाकर 2,81,197 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) का गठन किया गया है और 1,94,879 एसएचजी को रिवॉल्विंग फंड के जरिये सहायता दी गई, जबकि 3,82,746 एसएचजी को ऋणों का वितरण एसएचजी बैंक लिंकेज कार्यक्रम के तहत किया गया है। 2178 कस्बों में स्ट्रीट वेंडर सर्वेक्षण पूरा कर लिया गया है और 16,76,403 स्ट्रीट वेंडरों को चिन्हित किया गया है तथा 7,92,286 आईडी कार्ड जारी किये गये हैं। शहरी बेघरों के लिए 1,565 आश्रय स्थलों को मंजूरी दी गई है और 961 आश्रय स्थल परिचालन में आ चुके हैं। ■

कमल संदेश अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध

लॉग इन करें:

www.kamalsandesh.org

राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

सिर्फ चार वर्षों में सिटी गैस वितरण का कवरेज दोगुना हुआ

केन्द्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस तथा कौशल विकास मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि मई, 2014 से, जब से हमारी सरकार सत्ता में आई, हमने सीजीडी नेटवर्क के कवरेज को दोगुना कर इसे 130 जिलों में फैले 94 भौगोलिक क्षेत्रों तक विस्तारित कर दिया है। प्राकृतिक गैस भविष्य का ईंधन है और आवश्यकता है कि भारत के प्राथमिक ऊर्जा बास्केट में गैस के हिस्से को वर्तमान 6.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत तक कर दिया जाए।

श्री प्रधान ने कहा कि 2014 तक भारत के पास 73 जिलों के 47 भौगोलिक क्षेत्रों में सीटी-नेटवर्क था। नौवीं बोली दौर के माध्यम से हम 174 जिलों को कवर करते हुए अन्य 86 भौगोलिक क्षेत्रों में सीटी-नेटवर्क आरंभ कर रहे हैं। इस दौर के बाद भारत के पास देश में कुल 640 जिलों के लगभग 50 प्रतिशत एवं देश की आबादी के लगभग 50 प्रतिशत (61 करोड़) तक सीजीडी कवरेज होगा।

8 मई को नौवीं सीजीडी बोली दौर को संबोधित करते हुए श्री प्रधान ने कहा कि अब तक का यह सबसे बड़ा दौर है, जो देश के 12 राज्यों एवं दो संघ शासित प्रदेशों को कवर करता है। उन्होंने कहा कि बोली की प्रक्रिया को तर्कसंगत बनाया गया है और गंभीर बोलीकर्ताओं को आकर्षित करने, प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने तथा विजेता को निर्धारित करने वाली बैंक गारंटी की राशि जैसे अतार्किक मानकों को दूर करने के लिए निवेशक अनुकूल मानदंडों का निर्माण किया गया है।

मंत्री महोदय ने रेखांकित किया कि भारत में प्राकृतिक गैस क्षेत्र में सुधार महत्वपूर्ण है और गैस उपयोग मॉडल के परिष्करण में पीएनजीआरबी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है और एक नियामक से अब यह एक सुविधा प्रदाता भी बनता जा रहा है। पीएनजीआरबी के अध्यक्ष श्री डी.के सर्राफ ने बताया कि वर्तमान एलएनजी अवसंरचना एक बड़ी बाधा है और 26 एमएमटीपीए से बढ़ाकर 2022 तक लगभग 50 एमएमटीपीए तक पहुंचाए जाने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है। ■

'अमृत' के तहत 11,945 करोड़ रुपये जारी

37 लाख स्ट्रीट लाइटों में एलईडी लाइटें लगाई गई

'अटल मिशन फॉर रिजॉल्यूशन ऐंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन' (अमृत) के तहत इस समय 77,640 करोड़ रुपये की राज्य वार्षिक कार्य योजना (एसएएपी) में से 65,075 करोड़ रुपये की लागत वाली परियोजनाएं (84 प्रतिशत) क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। इनमें ऐसी परियोजनाएं भी शामिल हैं, जिनके लिए निविदाएं जारी कर दी गई हैं। इसी तरह इनमें ऐसी परियोजनाएं भी शामिल हैं, जिनसे संबंधित डीपीआर को मंजूरी दे दी गई है। इस मिशन से 22 करोड़ से भी अधिक शहरी आबादी लाभान्वित होगी।

अब तक कुल मिलाकर 11,945 करोड़ रुपये जारी किये गये हैं। 325 करोड़ रुपये की लागत वाली लगभग 400 परियोजनाएं पहले ही पूरी हो चुकी हैं और 40,074 करोड़ रुपये की लागत वाली 2,188 परियोजनाओं के लिए ठेके दिये जा चुके हैं तथा ये क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। इसके अलावा 13,586 करोड़ रुपये की लागत वाली 895 परियोजनाएं फिलहाल निविदाएं जारी करने की प्रक्रिया में हैं और 10,824 करोड़ रुपये की लागत वाली 729 परियोजनाओं के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्टों (डीपीआर) को मंजूरी दे दी गई है। मिशन के तहत और अन्य योजनाओं के साथ सामंजस्य के जरिये अब तक 8.58 लाख पेयजल कनेक्शन दिये गये हैं। मिशन की समाप्ति अर्थात जून 2020 तक देशभर में लगभग 1.4 करोड़ पेयजल कनेक्शन मुहैया कराये जाएंगे।

37 लाख स्ट्रीट लाइटों में सामान्य बल्ब के बजाय कम ऊर्जा खपत वाले एलईडी लाइटें लगाई गई हैं। मिशन के तहत लगभग 322 हरित स्थल और पार्क परियोजनाएं पूरी की जा चुकी हैं। निर्माण परमिट के लिए दिल्ली और मुम्बई में एकल खिड़की मंजूरी प्रणाली क्रियान्वित की गई है, जिसके तहत सभी तरह की मंजूरियों के लिए केवल 8 प्रक्रियाओं और 60 दिनों से भी कम अवधि की जरूरत पड़ती हैं। 370 मिशन शहरों में ऑनलाइन भवन निर्माण अनुमति प्रणालियों (ओबीपीएस) का परिचालन शुरू हो चुका हैं और ये प्रणालियां बाकी शहरों में क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत राज्यों को कुल मिलाकर 24,475 करोड़ रुपये जारी किये गये। अब तक इस योजना के तहत 45.86 लाख मकानों को स्वीकृति दी गई है। इनमें से 23.43 लाख मकानों की नींव डालने का काम पूरा हो चुका है और 7.02 लाख मकानों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका हैं (पूर्ववर्ती योजना के अपूर्ण मकान भी इनमें शामिल हैं)। ■

आधारभूत लक्ष्य

| दीनदयाल उपाध्याय |

हम जब भारत के लोग आर्थिक कार्यक्रम का विचार करते हैं तो हमारे सम्मुख कुछ ऐसे निश्चित लक्ष्य एवं तथ्य आते हैं, जिन्हें हम बदलना नहीं चाहेंगे, बल्कि सब प्रकार से उनका संरक्षण एवं संवर्धन ही हमारे प्रयत्नों का उद्देश्य होना चाहिए। प्रथम, भारत ने बड़े प्रयत्नों के बाद अंग्रेजों से मुक्ति पाई है। हम किसी भी शर्त पर इस स्वतंत्रता को गंवाना नहीं चाहेंगे। हमारी योजनाओं का प्रथम लक्ष्य होना चाहिए, अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा का सामर्थ्य उत्पन्न करना। दूसरे, हमने अपने लिए एक प्रजातंत्रीय ढांचा चुना है। यदि आर्थिक समृद्धि का कोई भी कार्यक्रम हमारी प्रजातंत्रीय पद्धति के मार्ग में बाधक होता है तो वह हमें स्वीकार नहीं होगा। तीसरे हमारे जीवन के कुछ सांस्कृतिक मूल्य हैं जो हमारे लिए तो राष्ट्रीय जीवन के कारण, परिणाम और सूचक हैं तथा विश्व के लिए भी अत्यंत उपादेय हैं। विश्व को इस संस्कृति का ज्ञान कराना हमारा राष्ट्रीय जीवनोद्देश्य हो सकता है। इस संस्कृति को गंवाकर यदि हमने अर्थ कमाया भी तो वह निरर्थक और अनर्थकारी होगा।

हमारा आर्थिक कार्यक्रम यद्यपि इन मर्यादाओं के अंतर्गत ही रहेगा, फिर भी इनसे हमारे प्रयत्नों के मार्ग में कोई रुकावट नहीं। ये नियोजकों के पैर की बेड़ियां नहीं, बल्कि उनके मार्ग के संबल हैं। यदि इन तीनों भावनाओं का सही-सही उपयोग किया जाए, तो उनसे राष्ट्र के सामूहिक प्रयत्नों को भारी बल मिल सकता है। यदि कल की समृद्धि के लिए आज कष्ट उठाने हैं, तो उसके लिए मन की तैयारी इन भावनाओं के अतिरिक्त आर्थिक उद्देश्यों से नहीं की जा सकती।

सैनिक सामर्थ्य की अभिवृद्धि

राजनीतिक स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए राष्ट्र का सैनिक दृष्टि से संरक्षण करना आवश्यक है। इस हेतु हम युद्ध सामग्री के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकते। यह निर्भरता एक ओर तो हमें दूसरों का कृपाकांक्षी बना देगी, दूसरी ओर युद्ध सामग्री पैदा करने वाले राष्ट्रों के मन में अपने इस सामग्री के बाजार बनाए रखने और बढ़ाने के लिए, सदैव ही युद्ध की विभीषिका निर्माण करने का मोह उत्पन्न करेगी। यदि भारत जैसा सामरिक महत्त्व की स्थिति वाला देश सैनिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो जाए, तो विश्व की शांति को भंग करने की संभावनाएं भी कम हो जाएंगी।

आत्मनिर्भरता

यह भी आवश्यक है कि हम आर्थिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बनें। यदि हमारे कार्यक्रमों की पूर्ति विदेशी सहायता पर निर्भर रही तो वह अवश्य ही हमारे ऊपर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बंधनकारक होगी। हम सहायता देने वाले देशों के आर्थिक प्रभाव क्षेत्र में आ जाएंगे। अपनी आर्थिक योजनाओं की सफल पूर्ति में संभव बाधाओं को बचाने की दृष्टि से हमें अनेक स्थलों पर मौन रहना पड़ेगा। जो राष्ट्र दूसरों पर निर्भर रहने की आदत डाल लेता है, उसका स्वाभिमान नष्ट हो जाता है। ऐसा स्वाभिमानशून्य राष्ट्र कभी अपनी स्वतंत्रता की क़ीमत नहीं आंक सकता। यह भी निश्चित है कि बाहर का कोई भी देश हमें हमारे ढंग से उपभोग करने के लिए सहायता नहीं देगा। हमारी योजनाओं की वे छानबीन करेंगे और फिर हमें वे योजनाएं बनानी पड़ेगी, जो चाहे हमारे अनुकूल न हों, किंतु विदेशी सहायता के साथ मेल खा सकें।

प्रजातंत्र का पोषण

हमारा आर्थिक कार्यक्रम प्रजातंत्र का संरक्षक एवं पोषक होना चाहिए। राष्ट्र की शासन व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को सहभागी बनाना ही प्रजातंत्र का उद्देश्य है। इसके लिए चुनाव की प्रणाली साधन के रूप

में अपनाई गई है। चुनाव से प्रजातंत्र प्रतिनिधितंत्र का रूप धारण कर लेता है। पुराने यूनान के नगर राज्यों के समान प्रजा द्वारा प्रत्यक्ष शासन एक विशाल क्षेत्र में संभव नहीं। अतः प्रतिनिधियों की आवश्यकता है। किंतु शासन के बहुत से कार्य ऐसे हैं, जिन्हें हम स्थानीय आधार पर कर सकते हैं। इन्हें प्रतिनिधियों द्वारा चलाई गई सत्ता को सौंपने की आवश्यकता नहीं। अतः प्रशासनिक विकेंद्रीकरण राजनीतिक प्रजातंत्र के लिए नितांत आवश्यक है।

प्रतिनिधियों का निर्वाचन जितना निष्पक्ष और स्वतंत्रता से हो सकेगा, उतना ही अधिक वे प्रजातंत्र को सार्थक कर सकेंगे। चूंकि मनुष्य का कोई भी निर्णय एकांगी नहीं होता, इसलिए इस स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है कि वह आर्थिक दृष्टि से भी स्वतंत्र हो। राजनीतिक प्रजातंत्र बिना आर्थिक प्रजातंत्र के नहीं चल सकता। जो अर्थ की

दृष्टि से स्वतंत्र है, वही राजनीतिक दृष्टि से अपना मत स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त कर सकेगा। भीष्म पितामह जैसे व्यक्ति को भी आर्थिक परतंत्रता के कारण अपने राजनीतिक विचारों पर प्रतिबंध लगाना पड़ा। सभा में वे अन्याय का प्रतिकार नहीं कर पाए। उन्होंने स्वीकार किया कि पुरुष अर्थ का दास होता है (अर्थस्य पुरुषो दासः), अतः अर्थ की स्वतंत्रता आवश्यक है।

व्यक्ति के अधिकार

व्यक्ति के नाते जब हम आर्थिक स्वतंत्रता अथवा प्रजातंत्र का विचार करते हैं, तो हमें उसके कुछ अधिकारों को मान्यता तथा उनके संरक्षण की गारंटी देनी होगी। (उत्पादन और उपभोग इन दो प्रमुख कर्मों के द्वारा व्यक्ति आर्थिक क्षेत्र में अवतीर्ण होता है। यदि उसे उत्पादन और उपभोग इन दोनों की स्वतंत्रता प्राप्त हो गई, तो हम कह सकते हैं कि वह आर्थिक स्वतंत्रता का उपभोग कर रहा है।) इनमें भी उत्पादन की स्वतंत्रता प्रमुख है, क्योंकि उसके द्वारा ही व्यक्ति अपने उपभोग की पात्रता प्राप्त करता है। यदि वह सामूहिक उत्पादन में सहभागी न हो तो वह न तो राष्ट्र को अपना योगदान दे सकेगा और न उपभोग की क्षमता सिद्ध कर सकेगा। हां, यह अवश्य है कि वह पूरे जीवन तथा सभी अवस्थाओं में उत्पादन नहीं कर सकता। बच्चा और बूढ़ा, रोगी और अपंग साधारणतः काम में नहीं लग सकता, फिर भी उन्हें उपभोग तो करना पड़ता है और कई बार तो उनका हिस्सा 'नॉर्मल' से अधिक ही होता है। अतः जहां हमें व्यक्ति को इस बात की आश्वस्ति देनी होगी कि वह हमेशा काम पा सकेगा, वहां हमें इसकी भी व्यवस्था करनी होगी कि जिन अवस्थाओं में वह काम नहीं कर सकता, उस समय भी उसे अपने उपभोग की स्वतंत्रता से वंचित न होना पड़े।

'प्रत्येक को वोट' जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निकष है, वैसे ही प्रत्येक को काम' यह आर्थिक प्रजातंत्र का मापदंड है। काम का यह अधिकार बेगार या दास मज़दूरी (Slave Labour) से उसी प्रकार नहीं होता जिस प्रकार कम्युनिस्ट देशों को 'वोट' प्रजातंत्रीय अधिकार का उपभोग नहीं है। काम प्रथम तो जीविकोपार्जनीय हो तथा दूसरे व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतंत्रता हो।

प्रत्येक को काम

'प्रत्येक को वोट' जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निकष है, वैसे ही प्रत्येक को काम' यह आर्थिक प्रजातंत्र का मापदंड है। काम का यह अधिकार बेगार या दास मज़दूरी (Slave Labour) से उसी प्रकार नहीं होता जिस प्रकार कम्युनिस्ट देशों को 'वोट' प्रजातंत्रीय अधिकार का उपभोग नहीं है। काम प्रथम तो जीविकोपार्जनीय हो तथा दूसरे व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतंत्रता हो। यदि काम के बदले में राष्ट्रीय आय का न्यायोचित भाग नहीं मिलता तो उस काम की गिनती बेगार में होगी। इस दृष्टि से न्यूनतम वेतन, न्यायोचित वितरण तथा किसी-न-किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था आवश्यक हो जाती है।

मर्यादाएं

उत्पादन और उपभोग की अमर्यादित स्वतंत्रताओं की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि एक व्यक्ति द्वारा उत्पादन की स्वतंत्रता दूसरे के मार्ग में बाधक होती है तो वह नहीं दी जा सकती। एक बड़े कारख़ाने का मालिक यद्यपि स्वयं उत्पादन की स्वतंत्रता का उपभोग करता है, किंतु वह छोटे-छोटे उद्योगों को समाप्त कर उनकी स्वतंत्रता का अपहरण करता है। फिर कई बार उसके कारखाने में काम करने वाले मजदूरों की स्वतंत्रता भी बहुत ही सीमित हो जाती है। अतः नियमन आवश्यक है। हमें इस बात का भी विचार करना होगा कि एक की उत्पादन की स्वतंत्रता दूसरे की उपभोग की स्वतंत्रता को समाप्त न कर दे। खाद्य में मिलावट उत्पादन की स्वतंत्रता के नाम पर नहीं की जा सकती। यह जो शुद्ध खाद्य चाहता है, उसकी स्वतंत्रता के प्रतिकूल है।

कहा जाता है कि स्वतंत्र एवं प्रतिस्पर्धांगण व्यक्ति को उपभोग की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसके अनुसार जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को ख़रीदता है तो वह आर्थिक क्षेत्र में अपने मताधिकार का प्रयोग करता है। इस प्रकार वरण के द्वारा उपभोक्ता उत्पादकों में से अपना प्रतिनिधि चुनकर अर्थव्यवस्था की दिशा और गति निश्चित करता है। यह तर्क व्यवहार में पूरा नहीं उतरता। प्रारंभ में उपभोक्ता किसी वस्तु का वरण करके उसके उत्पादक को अवश्य ही उसकी योग्यता और कुशलता, किफ़ायतसारी और बढ़िया माल पैदा करने की क्षमता के लिए पुरस्कृत करता है। किंतु जिनको वह अपना मत नहीं देता वे आर्थिक क्षेत्र से धीरे-धीरे हट जाते हैं। विरोधियों के समाप्त होने पर जब एक या कुछ उत्पादकों का उस क्षेत्र में एकाधिपत्य हो जाता है, तो वे उपभोक्ता से उसके प्रजातंत्रीय अधिकार को छीन लेते हैं। फिर मूल्य मांग और पूर्ति के नियमों से निश्चित न होकर उत्पादकों की अपनी इच्छा और योजना से होते हैं। आर्थिक क्षेत्र में यह एक प्रकार की डिक्टेटरशिप है। प्राप्त शक्ति तथा प्रचार तंत्र के सहारे दोनों ही सामान्य जन को उसके अधिकार से वंचित रखते हैं। एतदर्थ आवश्यक है कि उत्पादन के सामर्थ्य की मर्यादाएं स्थापित की जाएं, जो कि विकेंद्रीकरण से ही संभव हैं। केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं, आर्थिक क्षेत्र में भी विकेंद्रीकरण चाहिए।

अर्ध-बेकारी

जैसे बेगार हमारी दृष्टि में काम नहीं है, वैसे ही व्यक्ति के द्वारा काम में लगे रहते हुए भी अपनी शक्ति भर उत्पादन न कर सकना भी काम नहीं। अंडर एंप्लायमेंट भी एक प्रकार की बेकारी है। भारत जैसे देश के लिए जहां श्रम ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। श्रम का सामर्थ्यानुसार अनुपयोग घातक है। अतः विकेंद्रीकरण के साथ हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि राष्ट्र के उत्पादन में व्यक्ति अपना पूर्ण योगदान दे सके। बिना इसके न्यूनतम स्तर और सामाजिक सुरक्षा की गारंटी के द्वारा उपभोग की स्वतंत्रता बेमानी हो जाएगी। ये व्यवस्थाएं मौद्रिक अवमूल्यन के कारण मनुष्य को अपेक्षित स्तर प्रदान नहीं कर सकेंगी।

विकेंद्रीकरण

जैसे एक स्थान पर आर्थिक अथवा राजनीतिक सामर्थ्य का केंद्रीकरण प्रजातंत्र के विरुद्ध है, वैसे ही एक ही व्यक्ति या संस्था के पास राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक शक्ति का केंद्रीकरण लोकतंत्र के मार्ग में बाधक है। साधारणतया तो जब किसी भी एक क्षेत्र की शक्ति केंद्रित हो जाती है, तो केंद्रस्थ व्यक्ति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रीति से अन्य क्षेत्रों की शक्ति भी अपने हाथ में लेने का प्रयास करते हैं। इसमें से ही ख़िलाफ़त और कम्युनिस्टों की तानाशाही सरकारें पैदा हुईं। यद्यपि मनुष्य का जीवन एक है और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियां एक-दूसरे की पूरक हैं, फिर भी उन प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले निकाय अलग-अलग रहने चाहिए। साधारणतया राज्य की विभिन्न इकाइयों को प्रशासन के क्षेत्र से हटकर अर्थ के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पहले आर्थिक क्षेत्र पर आधिपत्य जमाकर फिर परोक्ष रूप से राज्य पर अधिकार करती है। तो समाजवाद राज्य को ही संपूर्ण उत्पादन के साधनों का स्वामी बना देता है। दोनों व्यवस्थाएं व्यक्ति के प्रजातंत्रीय अधिकार एवं उसके स्वस्थ विकास के प्रतिकूल हैं। अतः हमें विकेंद्रीकरण के साथ-साथ शक्तियों के विभक्तीकरण का भी विचार करना पड़ेगा।

भारतीय संस्कृति के मूल्यों का अधिक विवेचन करने की यहां आवश्यकता नहीं। इतना ही कहा जा सकता है कि उसने मानव व्यवहार की आधारशिला आत्मीयता मानी है। कुटुंब से लेकर संपूर्ण विश्व तक इस सर्वात्मैक्य की भावना की व्यावहारिक मर्यादाएं रखी हैं। जिस व्यवस्था में मानव-मानव के बीच का व्यवहार, उसकी अपनी स्थिति के अनुसार, कृत्रिम न होकर आत्मीयता के आधार पर हो सके, वही हमारे लिए उपयुक्त होगी। केंद्रित व्यवस्थाएं मानव को मानव न मानकर उससे एक टाइप के साथ व्यवहार करती हैं। उनमें मानव की विविधताओं और विशेषता के लिए कोई स्थान नहीं। फलतः वे उसे ऊंचा उठाने के स्थान पर एक मशीन का पुर्जा मात्र बना देती हैं। उसका अपना व्यक्तित्व मारा जाता है। अतः विकेंद्रीकरण हमारी संस्कृति के भी अनुकूल है। इस व्यवस्था में व्यक्ति व्यवहार करता है। निश्चित ही इसमें मानव संबंधों और मानव के सुधार तथा विकास की बहुत गुंजाइश है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय सुरक्षा, पूर्ण रोजगारी, न्यूनतम उपयोग की आश्वस्ति तथा विकेंद्रीकरण हमारे आर्थिक कार्यक्रम के आधारभूत आवश्यक लक्ष्य हो सकते हैं। ■

(*'भारतीय अर्थ-नीति विकास की एक दिशा'* से साभार)

'कांग्रेस के काले कारनामे जनता के सामने उजागर'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 17 मई को कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा बार-बार संवैधानिक मूल्यों एवं लोकतंत्र का अपमान करने को लेकर उन्हें कठघरे में खड़ा करते हुए करारा प्रहार किया। श्री शाह ने एक के बाद एक कई ट्वीट्स करते हुए कांग्रेस पार्टी को सच्चाई का आईना दिखाया और कांग्रेस के काले कारनामों को जनता के सामने उजागर किया।

अपने ट्वीट्स में श्री शाह ने कटाक्ष करते हुए कहा कि स्पष्ट है कि कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष को अपने पार्टी के इतिहास के बारे में पता नहीं है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की पार्टी की विरासत देश पर भयानक आपातकाल थोपने, अनुच्छेद 356 का मनमाने ढंग से। बार-बार दुरुपयोग करने और अदालतों, मीडिया एवं सिविल सोसायटी की व्यवस्थाओं एवं अधिकारों का विध्वंस करने की रही है।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कर्नाटक में जनता ने आखिर किसको जनादेश दिया - भारतीय जनता पार्टी को जिसने 104 सीटों पर विजय प्राप्त की या फिर कांग्रेस को जो केवल 78 सीटों पर सिमट कर रह गई, जिसके मुख्यमंत्री खुद भी अपनी सीट बड़े अंतर से हार गए। ज्ञात हो कि कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया अपनी विधानसभा चामुन्डेश्वरी से 36,000 से अधिक वोटों से हार गए और उनकी आधी कैबिनेट को करारी हार झेलनी पड़ी। श्री शाह ने कहा कि जनता दल सेक्युलर को तो केवल 37 सीटें ही मिल पाई और उनके कई उम्मीदवारों की जमानत भी जब्त हो गई। जनता सब जानती है और समझती है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक की जनता ने कांग्रेस की भ्रष्टाचारी एवं विभाजनकारी राजनीति की परिचायक कांग्रेस की सिद्धारमैया सरकार को उखाड़ फेंकने का जनादेश दिया है।

राहुल गांधी पर कड़ा प्रहार जारी रखते हुए श्री शाह ने कहा कि 'लोकतंत्र की हत्या' उसी क्षण हो गई थी, जब हताश और निराश कांग्रेस ने कर्नाटक के कल्याण के लिए नहीं बल्कि तुच्छ राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए जद(एस) को 'अवसरवादी' प्रस्ताव दिया था जो कि वाकई शर्मनाक है। ■

माधव सदाशिव राव गोलवलकर

(19 फ़रवरी 1906 – 5 जून 1973)

श्री माधव सदाशिव राव गोलवलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक तथा महान विचारक थे। उन्हें जनसाधारण 'गुरूजी' के ही नाम से अधिक जानते हैं। श्री गुरूजी का जन्म 19 फ़रवरी 1906 को महाराष्ट्र के नागपुर जिले में हुआ था। वे अपने माता–पिता की चौथी संतान थे। उनके पिता का नाम श्री सदाशिव राव उपाख्य 'भाऊजी' तथा माता का श्रीमती लक्ष्मीबाई उपाख्य 'ताई' था। उनका बचपन में नाम माधव रखा गया, पर परिवार में वे मधु के नाम से ही पुकारे जाते थे।

मधु जब मात्र दो वर्ष के थे तभी से उनकी शिक्षा प्रारम्भ हो गयी थी। पिता श्री भाऊजी जो भी उन्हें पढ़ाते थे, उसे वे सहज ही कंठस्थ कर लेते थे। बालक मधु में कुशाग्र बुद्धि, ज्ञान की लालसा, असामान्य स्मरण शक्ति जैसे गुणों का समुच्चय बचपन से ही विकसित हो रहा था। सन् 1919 में उन्होंने 'हाई स्कूल की प्रवेश परीक्षा' में विशेष योग्यता दिखाकर छात्रवृत्ति प्राप्त की। सन् 1922 में 16 वर्ष की आयु में माधव ने मैट्रिक की परीक्षा चांदा (अब चन्द्रपुर) के 'जुबली हाई स्कूल' से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सन् 1924 में उन्होंने नागपुर से विज्ञान विषय में इण्टरमीडिएट की परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। अंग्रेजी विषय में उन्हें प्रथम पारितोषिक मिला।

इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद माधवराव के जीवन में एक नये दूरगामी परिणाम वाले अध्याय का प्रारम्भ सन् 1924 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश के साथ हुआ। सन् 1926 में उन्होंने बी.एससी. और सन् 1928 में एम.एससी. की परीक्षायें भी प्राणि–शास्त्र विषय में प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण की। उनका विद्यार्थी जीवन अत्यन्त यशस्वी रहा।

इसके पश्चात् बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्हें प्राध्यापक पद पर सेवा करने का प्रस्ताव मिला। 16 अगस्त सन् 1931 को श्री गुरूजी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राणि–शास्त्र विभाग में प्राध्यापक का पद संभाल लिया। अपने विद्यार्थी जीवन में भी माधव राव अपने मित्रों को मार्गदर्शन दिया करते थे और अब तो अध्यापन उनकी आजीविका का साधन ही बन गया था। प्राध्यापक के नाते माधव राव अपनी विलक्षण प्रतिभा और योग्यता से छात्रों में इतने अधिक अत्यन्त लोकप्रिय हो गये कि उनके छात्र उनको 'गुरुजी' के नाम से सम्बोधित करने लगे। इसी नाम से वे आगे चलकर जीवन भर जाने गये।

माधव राव यद्यपि विज्ञान के परास्नातक थे, फिर भी आवश्यकता पड़ने पर अपने छात्रों तथा मित्रों को अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, गणित तथा दर्शन जैसे अन्य विषय भी पढ़ाने को सदैव तत्पर रहते थे। यदि उन्हें पुस्तकालय में पुस्तकें नहीं मिलती थीं, तो वे उन्हें खरीद कर और पढ़कर जिज्ञासु छात्रों एवं मित्रों की सहायता करते रहते थे। उनके वेतन का बहुतांश

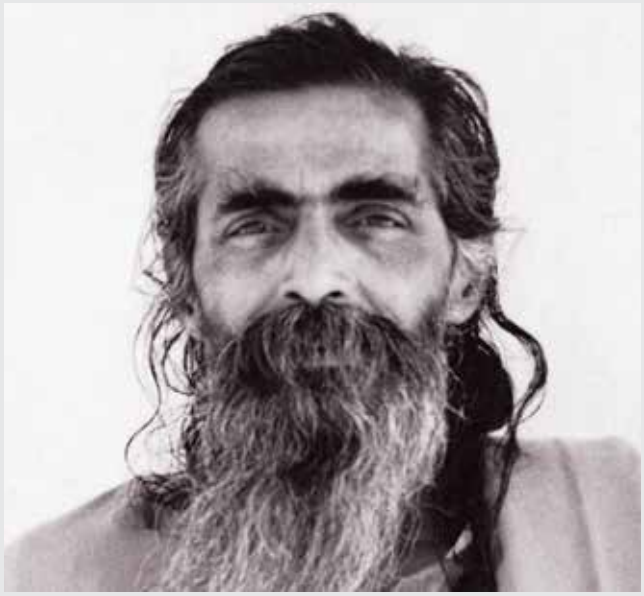

अपने होनहार छात्र–मित्रों की फीस भर देने अथवा उनकी पुस्तकें खरीद देने में ही व्यय हो जाया करता था।

गुरूजी का अध्ययन व चिंतन इतना सर्वश्रेष्ठ था कि वे देश भर के युवाओं के लिए ही प्रेरक पुंज नहीं बने, अपितु पूरे राष्ट्र के प्रेरक पुंज व दिशा निर्देशक हो गये। वे युवाओं को ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित करते रहते थे। वे विदेशों में ज्ञान प्राप्त करने वाले युवाओं से कहा करते थे कि युवकों को विदेशों में वह ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, जिसका स्वदेश में विकास नही हुआ है। ज्ञान प्राप्त कर उन्हें शीघ्र स्वदेश लौट आना चाहिए।

सबसे पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के द्वारा काशी विश्वविद्यालय भेजे गए नागपुर के स्वयंसेवक भैयाजी दाणी के द्वारा श्री गुरूजी संघ के सम्पर्क में आये और उस शाखा के संघचालक भी बने। 1937 में वह नागपुर वापस आ गए। डॉ. हेडगेवार के सान्निध्य में उन्होंने एक अत्यंत प्रेरणादायक राष्ट्र समर्पित व्यक्तित्व को देखा। 1938 के पश्चात् संघ कार्य को ही उन्होंने अपना जीवन कार्य मान लिया। 1939 में श्री माधव सदाशिव गोलवलकर को संघ का सरकार्यवाह नियुक्त किया गया। 1940 में डॉ. हेडगेवार के देहावसान के बाद उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक का दायित्व संभाला। उन्होंने अथक परिश्रम और निरंतर देश भ्रमण से लगभग 33 वर्ष तक इस पद पर रहते हुए संघ को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया और व्यक्ति–निर्माण का महती कार्य संपादित किया। 5 जून, 1973 को श्री माधव सदाशिव राव गोलवलकर परमात्मा में लीन हो गये। ■

भाजपा किसान मोर्चा का त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान के तहत भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा का राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम गुरुग्राम में 18, 19 और 20 मई को संपन्न हुआ। इसमें किसान मोर्चा के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों के साथ ही सभी राज्यों के अध्यक्ष और महामंत्री शामिल हुए। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) सर्वश्री रामलाल, मोर्चा के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह मस्त, केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और हरियाणा के कृषि मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे, भाजपा महामंत्री डॉ. अनिल जैन एवं श्री भूपेन्द्र यादव, प्रशिक्षण विभाग राष्ट्रीय संयोजक महेशचंद्र शर्मा, इस्पात मंत्री चौधरी वीरेंद्र सिंह, सह-संगठन महामंत्री शिवप्रकाश एवं हृदयनाथ सिंह ने प्रशिक्षण शिविर में कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र की शुरुआत किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री वीरेंद्र सिंह मस्त, हरियाणा के कृषि मंत्री ओमप्रकाश धनकड़, हरियाणा भाजपा अध्यक्ष सुभाष बराला, पूर्व सांसद गुड़गांव डॉ. सुधा यादव आदि ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन करते हुए श्री वीरेंद्र सिंह मस्त ने कहा कि किसान मोर्चा ने जिन मुद्दों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया था सरकार ने उन सभी को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकार कर लिया और किसानों के हितों के अनुरूप सभी कदम उठाने वाली यह आजादी के बाद की पहली सरकार है। सरकार ने जल संरक्षण, मृदा परीक्षण, फसलों की लागत का डेढ़ गुना मूल्य देने, कृषि बीमा, बांस मिशन का नवीनीकरण जैसी सभी मांगों की ओर सकारात्मक कदम उठाया है। अब किसान मोर्चा के कार्यकर्ताओं को सरकार के कदमों की सही जानकारी जनता तक पहुंचाने का काम करना चाहिए। किसान मोर्चा गांवों में संवाद के माध्यम से सरकार के कामों की जानकारी जनता तक पहुंचाने में लगेगा।

उद्घाटन सत्र में ही सांसद और भाजपा के महामंत्री डॉ. अनिल जैन ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की सरकार आम जनता की समस्याओं के प्रति संवेदनशील है और इसके कारण वह अपना बजट किसान, मजदूर, गरीब, वंचित, शोषित, महिला, बेरोजगार आदि को ध्यान में रखकर बनाती है।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल ने अपने उद्बोधन में सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे स्वच्छता अभियान, उज्ज्वला योजना, नीम कोटेड यूरिया, फसलों की लागत का डेढ़ गुना मूल्य देने की घोषणा आदि का ग्रामीण जनता के बीच व्यापक प्रचार-प्रसार करने की सलाह किसान मोर्चा कार्यकर्ताओं को दी।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए केंद्रीय इस्पात मंत्री चौधरी वीरेंद्र सिंह ने कहा कि किसानों की आय का अन्य व्यवसायों की तुलना में कम बढ़ना ही उसकी समस्याओं का प्रमुख कारण है। उन्होंने बताया कि 1964-

65 में पहली बार एमएसपी की घोषणा हुई तो गेंहू का मूल्य 64 रुपया प्रति क्विंटल तय हुआ और उस समय कालेज के प्रवक्ता का वेतन 240 रुपया प्रति माह था। आज गेंहू की एमएसपी 1750 रुपये प्रति क्विंटल है, जबकि प्रवक्ता का वेतन एक लाख से सवा लाख रुपये तक हो गया है। इस प्रकार गेंहू के मूल्य में केवल 19 गुना, जबकि औसत वेतन में 60 गुना से भी अधिक वृद्धि हो चुकी है। उन्होंने कहा कि विषमता किसी भी समाज के लिए अभिशाप है और इसके रहते कोई भी व्यवस्था सुचारू ढंग से नहीं चल सकती है। कृषि राज्य मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने किसानों की सिकुड़ती हुई जोतों और गिरते भूजल स्तर को भारतीय कृषि की प्रमुख चुनौतियां बताया। उन्होंने कहा कि भारत में प्रतिवर्ष 80 हजार करोड़ रुपये के कृषि उत्पाद बर्बाद हो जाते हैं जो किसी भी स्थिति में उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि किसानों को परंपरागत खेती से हटकर नए प्रयोगों को अपनाने की आवश्यकता है। इससे उनकी आमदनी बढ़ेगी और वे समय के साथ चल सकेंगे।

भाजपा सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश ने संगठन के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि वर्तमान में भाजपा को छोड़कर सभी राजनीतिक दलों का आधार स्वार्थ और परिवार विशेष तक ही सीमित है। भाजपा के अतिरिक्त किसी भी दल के पास अब कोई वैचारिक आधार नहीं बचा है।

हरियाणा के कृषिमंत्री श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने किसानों की आय को बढ़ाने के बारे में उन्होंने दो उपायों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने परंपरागत अनाजों से फल-सब्जी, डेयरी, पोल्ट्री, मछली पालन की ओर बढ़ने तथा सीधे उत्पादों की बिक्री करने को कहा। श्री धनखड़ ने कहा कि पूरी दुनिया में किसान व्यावसायिक दृष्टि से "नो प्रॉफिट जोन" में हैं। यदि उन्होंने डायरेक्ट मार्केटिंग को नहीं अपनाया तो कृषि उत्पादों के मूल्यों का बड़ा हिस्सा बिचौलिए ले जाते रहेंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र को किसान मोर्चा के राष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री हृदयनाथ सिंह ने संबोधित किया। उन्होंने विस्तार से किसान मोर्चा के कार्यकर्ताओं को विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। इस कार्यक्रम का संचालन भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शैलेंद्र सेंगर ने किया। ■

जनता सत्य के निकट रहती है

प्रभात झा

देश है, तो समस्याएं होंगी। कोई भी देश यह दावा नहीं कर सकता कि उनके देश में कोई समस्या नहीं है। एक समय था जब भारत विश्व के अन्य देशों की समस्याओं का समाधानकारक केंद्र था। हर राष्ट्र की समस्याओं का समाधान का केंद्र बनकर भारत 'विश्व गुरु' कहलाता था। स्थिति आज भी वैसी ही बन सकती है। इसमें तो कोई दो मत नहीं। विश्व के जिन नागरिकों को आध्यात्मिक शांति की अपेक्षा होती है, वे एक-दो माह या एक दो वर्षों के लिए भारत के आध्यात्मिक केंद्रों पर आकर रहते ही हैं।

भारत का नागरिक विश्व में अपनी योग्यता और आवश्यकता के कारण जाता है, पर वह शांति प्राप्ति के लिए आज भी भारत में ही रहता है और भारत में आता रहता है।

भारत में आजादी के बाद देश की मूल समस्याओं की ओर शासकों ने ध्यान नहीं दिया। भारत एक विशाल गणतांत्रिक देश है। यहां की मूल समस्याएं नागरिकों से जुड़ी हैं। आज भी उतनी ही ज्वलंत हैं, जितनी पूर्व में रही। देश में पूर्व के लोगों ने, यानी आज़ादी के बाद जो भी शासन में आए, उन्होंने आज़ादी को ही भारत की हर समस्याओं की जीत समझ लिया। आजाद क्या हुए, सब कुछ मिल गया। जबकि सच्चाई यह है कि आजादी मिलने वाले दिन से हमें नागरिकों की नागरिक सुविधाओं से और उनके जीवन शैली के साथ भारत की प्रकृति के अनुसार उन समस्याओं के समाधान की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए था। हम ऐसा नहीं कर पाए, हम आज़ादी के बाद सत्ता

आजादी के पूर्व जो हममें आजादी प्राप्ति के लिए जुनून और जज्बा था, वह आजादी के बाद नहीं बना रहा। हमने मानव और समाज को केंद्र में रखकर योजनाएं नहीं बनाईं। हमने 'सत्ता' को केंद्र मानकर 'सत्ता' में आने के लिए योजना बनाते रहे। हमने आजादी के बाद नागरिक को वोटर बना दिया। नागरिक के नाते जो हमारा 'राष्ट्रीय कर्तव्य' था, वह धीरे-धीरे लुप्त होते हुए हम वोटर की भूमिका यानी अधिकार के प्रति जागरुक हो गए और कर्तव्यों के प्रति उदासीन होते चले गए।

में रहते हुए सेवा के माध्यम से सेवा में कैसे आगे आए, के बजाए हम सत्ता के माध्यम से सत्ता में कैसे आएं, इस दिशा में बढ़ते चले गए, यहीं से हमारी समस्याओं की जड़ें गहरी होती गईं।

आजादी के पूर्व जो हममें आजादी प्राप्ति के लिए जुनून और जज्बा था, वह आजादी के बाद नहीं बना रहा। हमने मानव और समाज को केंद्र में रखकर योजनाएं नहीं बनाईं। हमने 'सत्ता' को केंद्र मानकर 'सत्ता' में आने के लिए योजना बनाते रहे। हमने आजादी के बाद नागरिक को वोटर बना दिया। नागरिक के नाते जो हमारा 'राष्ट्रीय कर्तव्य' था, वह धीरे-धीरे लुप्त होते हुए हम वोटर की भूमिका यानी अधिकार के प्रति जागरूक हो गए और कर्तव्यों के प्रति उदासीन होते चले गए। भारत नागरिकों का नहीं, वोटरों का देश बन गया। हम नागरिक बोध से नागरिकों को दूर करते चले गए और उनकी आत्मा में मतबोध का जागरण अधिक करते गए। मतबोध के कारण हम भारतीयों के मन में सत्ता से अपेक्षा बढ़ गयी और समाज के प्रति उपेक्षा का भाव बढ़ता गया।

आजादी के बाद यह वर्षों चला। इसका परिणाम यह हो गया कि एक ही पार्टी की सरकार रही। अन्य राजनैतिक दलों का अस्तित्व धीरे-धीरे बढ़ रहा था। सत्ता आकर्षित नागरिकों में समाज आधारित भाव कम हो गया।

अतः समाज की ओर देखने के बजाए लोग सत्ता की ओर अधिक देखने लगे, जबकि सच्चाई यह है कि समाज ने भारत को आजादी दिलाई, न कि सत्ता ने। समाज, सत्ता की जननी है। सत्ता से समाज की सेवा होती है, न कि निर्माण। 'समाज' की उपेक्षा से समाज कमजोर होता गया और सत्ता मजबूत होती गई। जबकि लोकतंत्र की रक्षा और

उसकी सुरक्षा के लिए समाज और सत्ता के बीच सदैव संतुलन बने रहना चाहिए। उल्टे अच्छा तो यह कहा जाता है कि समाज का हाथ सत्ता से ऊपर रहे। संतुलित समाज और सत्ता के समन्वय से समाज की रक्षा भी होती है और सत्ता निरंकुश भी नहीं होती।

आजादी के बाद सत्ता में बदलाव भी हुआ पर स्थिति यह हुई कि बदलाव में आयी सत्ता ने जैसे ही कुछ प्रयास शुरू किया, तो लोग उन्हें सत्ता से हटने और हटाने का डर दिखाने लगे। विपक्ष में रहते हुए उस समय के लोग पूर्व के शासकों द्वारा उत्पन्न की गई समस्याओं का स्थायी समाधान तलाशने लगे।

उन्होंने इस भाव से काम शुरू किया कि वे जो करेंगे देश-समाज को अच्छा लगेगा और वह ऐसा करने के लिए सत्ता में बने रहेंगे। पर ऐसा नहीं हुआ। जब तक वो समस्याओं के स्थायी निदान की दिशा में बढ़े, तब तक उन्हीं की चलाचली की बेला आ गई। पांच साल के लिए चुने गए लोग बीच में ही चले गए। ऐसा एक बार नहीं दो-तीन बार हुआ और सत्ता के लिए सत्ता हावी रही और सेवा के लिए सत्ता कमजोर होती चली गई।

सन् 2014 में मई माह में देश में एक नई बयार बही। इस बयार में यह संकेत साफ छलक रहा था कि सत्ता समाज की सेवा के लिए आई है न कि सत्ता की सेवा के लिए। सत्ता को वर्तमान सरकार ने सेवा का माध्यम माना न कि सत्ता में पुनः आने का न्यौता। 'सत्ता' में जो समाज आता है, उसे भी विचार करना होगा कि देश में सत्ता सेवा के लिए या सत्ता से सत्ता में आने के लिए। आज जो दल सत्ता में है वह विश्वास से काम कर रहा है कि हम समाज की सेवा करेंगे, तो समाज अपना कर्तव्य अवश्य करेगा।

वर्तमान सत्ता का समाज पर बहुत विश्वास है। सत्ता का समाज पर सामाजिक विश्वास बनाए रखना और सत्ता का समाज पर विश्वास बनाए रखना लोकतंत्र को कभी भी बीमार नहीं होने देता। वर्तमान सत्ताधारी दल के नेता श्री नरेंद्र मोदी ने भारत के नागरिकों के प्रति उनके सामाजिक खुशहाली और उनके राष्ट्रीय गौरव को पूर्णता देने की दिशा में जो कदम उठाए हैं, वे भले ही कठोर हों, पर उसका लंबे अंतराल में आम नागरिकों के होने की संभावना व्यक्त की जा रही है। विरोधियों की चीत्कार से न घबराते हुए समाज चीत्कार न करे, इसकी चिंता अधिक की गई। वर्तमान के सत्ताधारियों के मन में एक अच्छी बात यह है कि देश की समस्याओं का तात्कालिक समाधान के बजाए मूलतः समाधान हो। यही कारण है कि वर्तमान सरकार निर्भीकता से बड़े से बड़े फैसले लेती जा रही है और देश में जनसहयोग और समाज सहयोग से अपना विस्तार कर रही है।

यह जय-पराजय सत्ता का खेल हो सकता है, परंतु समाज में 'अपराजेय' का स्थान जो सत्ता या समाधान बना लेते हैं वह स्थायी हो जाता है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसी दिशा में अपने कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कठोर से कठोर निर्णय लेते समय कभी सन् 2019 की चिंता नहीं की। उन्होंने चिंता की तो सिर्फ भारत के 125 करोड़ नागरिकों की। यहां एक बात और स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वर्तमान सत्ता के विरोधी चाहे जो आरोप लगाएं और लगवाएं, पर भारत की आजादी के बाद पहली यह नरेंद्र मोदी जी की सरकार है जो जनता की परीक्षा में विशिष्ट योग्यता प्राप्तांकों से निरंतर उत्तीर्ण हो रही है। विरोधी दल जो सोचते हैं, उनके केंद्र में सत्ता है और वर्तमान सत्ताधारी जो निर्णय ले रहे हैं, उनके केंद्र में समाज और उसकी सेवा और राष्ट्र की साख है। पिछले कुछ वर्षों में भारत के पूर्व शासन कर्ताओं ने भारत की साख को राख में मिला दिया था, जबकि वर्तमान मोदी सरकार राख में मिली साख को विश्व में चिंगारी बनाकर अपने राष्ट्र की अखंड ज्योति से विश्व को प्रकाशित करने का कार्य कर रही है। जनतंत्र में जनता जागरूक हुई है।

विपक्षियों को चाहिए कि वह समझे कि जागरूक जनता को अब न सत्ताधारी गुमराह कर सकते हैं और न विपक्ष। जनता जानती है, समाज जानता है कि आने वाले कल में समाज का भविष्य और राष्ट्र का भविष्य किनके हाथों में सुरक्षित है। सत्ताधारी को सतर्क जरूर रहना होगा कि उनके मन में समाज की सेवा का अहंकार न आए और वे जो राष्ट्रीय कर्तव्य के भाव से जो काम राष्ट्र और समाज के लिए कर रहे हैं, उसे और अधिक विनम्रता से करते रहें।

भारत के दो घोष वाक्य हैं - 'सत्यमेव जयते', 'सत्यम शिवम सुंदरम'। इन दोनों घोष वाक्यों की प्रकृति को अपने मन में रखते हुए यदि कार्य करते गए तो न केवल सन् 2019 बल्कि समाज और उन्हें सतत् राष्ट्र कार्य करते रहने का अवसर प्रदान करता रहेगा। यह राष्ट्र सदैव विनम्रता से हर उस व्यक्ति, समाज, संस्था और नेतृत्वकर्ता का ऋणी रहता है, जो उसकी आत्मीय रक्षा के लिए अपने कर्तव्यों को करता रहता है।

भारत के दो घोष वाक्य हैं - 'सत्यमेव जयते', 'सत्यम शिवम सुंदरम'। इन दोनों घोष वाक्यों की प्रकृति को अपने मन में रखते हुए यदि कार्य करते गए तो न केवल सन् 2019 बल्कि समाज और उन्हें सतत् राष्ट्र कार्य करते रहने का अवसर प्रदान करता रहेगा। यह राष्ट्र सदैव विनम्रता से हर उस व्यक्ति, समाज, संस्था और नेतृत्वकर्ता का ऋणी रहता है, जो उसकी आत्मीय रक्षा के लिए अपने कर्तव्यों को करता रहता है।

(लेखक सांसद एवं भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं)

मोर्चों की संयुक्त राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक

'देश में परिवारवाद की राजनीति का अंत'

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश से परिवारवादी राजनीति का अंत हो रहा है और परिश्रमवादी राजनीति लोगों का मन जीत रही है, जिसका ध्येय राष्ट्र प्रथम और लोगों की सेवा है।

भारतीय जनता पार्टी के 7 मोर्चों की संयुक्त राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पहुंचे प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य लोगों की सेवा करना है। उसके लिए राष्ट्र सर्वप्रथम है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र से परिवारवादी राजनीति का अंत हो रहा है और परिश्रमवादी राजनीति को लोगों का समर्थन मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारा परिश्रम देश को प्रथम बनाने और लोगों की सेवा के लिए है। उन्होंने मोर्चों को रचनात्मक कार्यों के माध्यम से लोगों से जुड़ने की नसीहत दी। साथ ही महात्मा गांधी की 150वीं जयंती और अन्य महापुरूषों की जयंतियों का मनाने और लोगों के बीच भाजपा का आधार बढ़ाने का आह्वान किया।

दिल्ली नगर निगम भवन सिविक सेंटर के केदारनाथ साहिनी सभागार में 17 मई को दिनभर चली इस बैठक का शुभारंभ भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने किया। इस मौके पर श्री अमित शाह ने मोर्चा कार्यकताओं को एक वर्ष में उन 22 करोड़ गरीबों के परिवारों से संपर्क करने का लक्ष्य दिया, जिन्हें केंद्र सरकार की किसी न किसी योजना का लाभ मिला है। इसके लिए एक समन्वित कार्ययोजना तैयार करने और मंडल एवं बूथ स्तर पर नमो ऐप से यह संपर्क अभियान करने को कहा है। इस मौके पर हर मोर्चे को उसके वर्ग के लोगों को सभी स्तर पर विशेष रूप से पार्टी से जोड़ने का काम दिया गया। श्री अमित शाह ने कहा कि आज 21 राज्यों में भाजपा की सरकार है। उन्होंने मोदी सरकार के चार साल की उपलब्धियां भी गिनाते हुए कहा कि 22 करोड़ गरीबों एवं उनके परिवारों के जीवन में कोई न कोई बदलाव आया है। भाजपा का लक्ष्य केवल सरकार बनाना नहीं है, बल्कि भारत को दुनिया में सम्मानित राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित कराना है और अंत्योदय के संकल्प को आगे बढ़ाते हुए आम जनजीवन में परिवर्तन लाना है। श्री अमित शाह ने सभी कार्यकर्ताओं को 2019 आम चुनाव की तैयारियों में जुट जाने का आह्वान किया है।

इस बैठक में राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) श्री रामलाल सहित भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष श्री विनोद सोनकर, अनुसूचित जनजाति मोर्चा के अध्यक्ष श्री रामविचार नेताम, महिला मोर्चा की अध्यक्ष श्रीमती विजया राहटकर, युवा मोर्चा की अध्यक्ष श्रीमती पूनम महाजन, किसान मोर्चा के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सिंह मस्त, अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष श्री अब्दुल रशीद अंसारी एवं पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रमुख श्री दारा सिंह चौहान मौजूद थे। ■

तृणमूल कांग्रेस प्रायोजित हिंसा के बीच भाजपा दूसरी सबसे बड़ी पार्टी उभर कर आई

पश्चिम बंगाल में हालिया सम्पन्न पंचायत चुनावों में भाजपा दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। यह पहली बार हुआ है कि भाजपा राज्य के प्रत्येक जिले में ग्राम पंचायत स्तर पर चुनाव जीती है और सीपीएम दूसरे स्थान से फिसल कर तीसरे स्थान पर पहुंच गई। इस बार भाजपा ने माओवादी प्रभावित जिले में अपनी पहचान बनाई है और राज्य के प्रत्येक जिले में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

भाजपा ने लगभग 5465 (17.1 प्रतिशत) ग्राम पंचायत सीटें जीती हैं। सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) 64.2 प्रतिशत सीटों पर विजय प्राप्त की। राज्य प्रायोजित और मत पत्र छीना झपटी में टीएमसी ने किसी तरह 34.2 प्रतिशत पंचायत सीटें निर्विरोध जीत लीं। निर्दलियों ने 1741 (5.4 प्रतिशत) ने वामपंथी मोर्चे (1615) से ज्यादा सीटें जीत ली जबकि वह 34 लम्बे वर्षों तक प्रदेश पर राज करती रही थी। कांग्रेस को मात्र 993 सीटें प्राप्त हो सकीं।

भाजपा ने आदिवासी बहुल पुरूलिया, झारग्राम, पश्चिम मिदनापुर और बांकुरा जो पूर्व में माओवाद प्रभावित रहा था, में 638 सीटें जीतीं जबकि टीएमसी को 754 पर विजय हासिल हुई। झारग्राम में भी बराबर की टक्कर बनी रही, जहां भाजपा को 329 सीटें और टीएमसी को 373 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। बांकुरा में, भाजपा ने 231 सीटें और टीएमसी ने 912 सीटें जीतीं। पश्चिमी मिदनापुर में भाजपा ने 352 सीटों और टीएमसी ने 1457 सीटों पर विजय प्राप्त की।

भाजपा का प्रदर्शन उत्तर बंगाल और मुस्लिम बहुल जिला और कांग्रेस गढ़ में ज्यादा बेहतर रही। वहां भाजपा कांग्रेस और वामपंथी मोर्चे से आगे रहकर दूसरे स्थान पर रही। भाजपा ने 526 सीटें जीतीं, जबकि टीएमसी ने मालदा में 108 सीटें जीत पाई। कांग्रेस को अलीपुरद्वार और जलपाईगुड़ी के उत्तरी बंगाल जिले में भाजपा को 268 और 286 सीटें प्राप्त हो सकीं।

पश्चिम बंगाल पंचायत चुनाव में हिंसा लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय: नरेन्द्र मोदी

गत 16 मई को नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव में लोकतंत्र की जिस प्रकार से हत्या की गई, यह लोकतंत्र के लिए यह चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि कोई नामांकन नहीं भर पाए, निर्विरोध चुनने के लिए यत्न किये जाएं, निर्दोष कार्यकर्ताओं की हत्या हो और यह सिर्फ भाजपा के ही नहीं बल्कि वहां के शासक दल के सिवाय सभी को मुश्किलें झेलनी पड़ी। प्रधानमंत्री ने कहा कि बंगाल की पिछली शताब्दी को देखें तक इसने देश को मार्गदर्शन देने का काम किया है। ऐसी महान भूमि को राजनीतिक स्वार्थ के लिए लहुलूहान कर दिया गया। उन्होंने कहा कि कोई चुनाव जीते, कोई हारे लेकिन 'लोकतंत्र के सीने पर घाव उभारने के विषय पर सभी राजनीतिक दलों, नागरिक समाज और न्यायपालिका को ध्यान देना होगा।'

भाजपा को 6125 पंचायत समिति सीटों में 460 (7.5 प्रतिशत) सीटें मिल पाई। टीएमसी की 3598 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। सीपीएम 63 सीटें जीतकर तीसरे स्थान पर रही। निर्दलीय उम्मीदवार 77 सीट जीत पाए।

जिला परिषद में भाजपा का प्रदर्शन बेहतर रहा। ग्राम पंचायत स्तर पर भाजपा का वोट शेयर 1 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत तक पहुंच गया। उल्लेखनीय है कि 2014 लोक सभा चुनावों में पश्चिम बंगाल में भाजपा का वोट शेयर 17.2 प्रतिशत तक पहुंच गया। यह 6.4 प्रतिशत वोटों से काफी बड़ी उछाल है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री दिलीप घोष ने इन परिणामों पर संतोष प्रगट किया है, क्योंकि पार्टी को टीएमसी गुंडों के आतंक का सामना करना पड़ा था। वास्तविक लड़ाई लोक सभा चुनावों में लड़ा जाएगा और हम बता देंगे कि लोग हमारे साथ हैं।

14 मई 2018 को 20 पश्चिम बंगाल जिलों में 621 जिला परिषद, 6123 पंचायत समिति और 31,802 ग्राम पंचायत सीटों पर चुनाव हुए। कुल 48,650 में से 16,814 में निर्विरोध चुनाव हुए। 3059 पंचायत समिति चुनाव नहीं हुआ और यही स्थिति 203 जिला परिषद सीटों पर भी बनी रही। ■

ग्राम स्वराज अभियान पूरी तरह सफल: अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 22 मई को नई दिल्ली स्थित भाजपा के केन्द्रीय कार्यालय में एक प्रेस वार्ता को संबोधित किया और 14 अप्रैल, 2018 से 05 मई, 2018 तक देश भर में भाजपा संगठन और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा मिशन मोड में चलाये गए 'ग्राम स्वराज अभियान' की सफलता पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने इस अभियान की सफलता एवं इसके उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए एक प्रेजेंटेशन भी प्रस्तुत किया।

श्री शाह ने कहा कि 14 अप्रैल, 2018 से 05 मई, 2018 तक भारतीय जनता पार्टी की मोदी सरकार और पार्टी कार्यकर्ताओं, दोनों ने मिलकर 'ग्राम स्वराज अभियान' चलाया जो अपने आप में विशिष्ट प्रकार का अनूठा प्रयोग था। उन्होंने कहा कि देश के सभी गांवों में से कुल 21,844 गांवों को चयनित किया गया, लेकिन कर्नाटक में विधानसभा चुनाव और पश्चिम बंगाल में स्थानीय निकाय के चुनाव के कारण इन दोनों राज्यों के चयनित गांवों को छोड़ दिया गया, इस तरह बाकी बचे 16,850 चयनित गांवों में (484 जिलों को कवर किया गया) जन-सामान्य के जीवन में बदलाव लाने वाली सात योजनाओं को शत-प्रतिशत पहुंचाने का कार्य इस दौरान सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

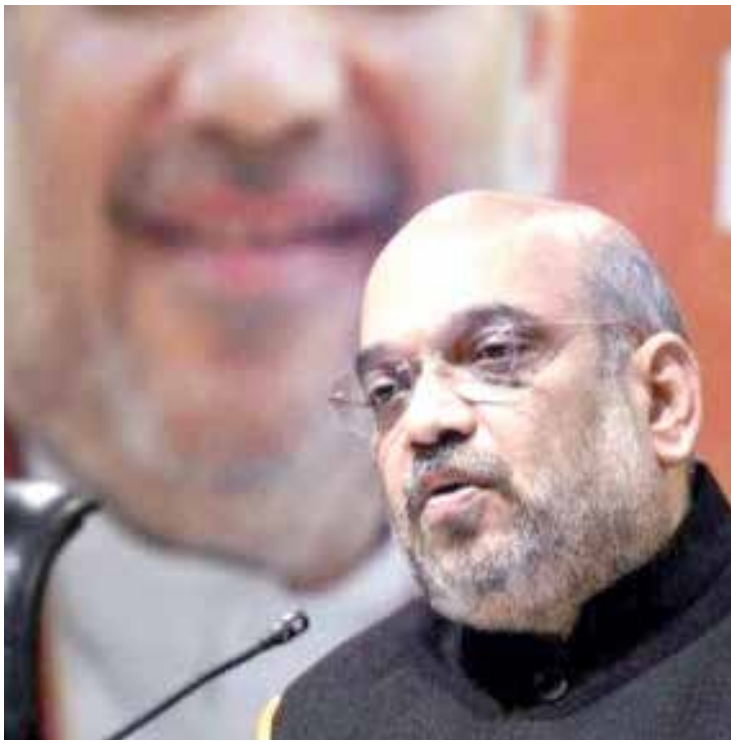

'ग्राम स्वराज अभियान' अपने आप में विशिष्ट प्रकार का अनूठा प्रयोग था। देश के सभी गांवों में से कुल 21,844 गांवों को चयनित किया गया, लेकिन कर्नाटक में विधानसभा चुनाव और पश्चिम बंगाल में स्थानीय निकाय के चुनाव के कारण इन दोनों राज्यों के चयनित गांवों को छोड़ दिया गया, इस तरह बाकी बचे 16,850 चयनित गांवों में जन-सामान्य के जीवन में बदलाव लाने वाली सात योजनाओं को शत-प्रतिशत पहुंचाने का कार्य इस दौरान सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना, उजाला योजना, जन-धन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं के लिए मिशन इन्द्रधनुष योजना को सभी 16,850 चयनित गांवों के हर घर में पहुंचाने का काम सरकार और संगठन ने मिलकर पूरा किया है। उन्होंने कहा कि इन 16,850 गांवों में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिस तक ये योजनायें न पहुंची हो। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र की भाजपा सरकार के प्रयासों से इन गांवों में हर घर बिजली पहुंची है, हर घर गैस कनेक्शन पहुंचा है, टीकाकरण का काम हुआ है, हर घर को बीमा योजनाओं के माध्यम से सुरक्षा कवच प्रदान किया गया है और हर घर में LED बल्ब भी लगाने का काम पूरा किया गया है।

श्री शाह ने कहा कि 'ग्राम स्वराज अभियान' की शुरुआत 14 अप्रैल, 2018 को बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी की जन्म जयंती के दिन से हुई थी। 22 अप्रैल को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी ने इस अभियान के संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी के सांसदों, विधायकों, जन-प्रतिनिधियों एवं पार्टी कार्यकर्ताओं से वीडियो ब्रिज के माध्यम से संवाद किया था। 18 अप्रैल को स्वच्छ भारत पर्व, 20 अप्रैल को उज्ज्वला पंचायत, 24 अप्रैल को पंचायती राज दिवस, 28 अप्रैल को ग्राम शक्ति अभियान, 30 अप्रैल को आयुष्मान

भारत, 02 मई को किसान कल्याण कार्यशालाएं और 05 मई को आजीविका एवं कौशल विकास के तहत कार्यक्रम आयोजित किये गए। उन्होंने कहा कि इन कार्यक्रमों में भारतीय जनता पार्टी के हर विधायक, सांसद, मेयर, जिला पंचायत सदस्य, पार्षद एवं संगठन पदाधिकारियों ने गांवों में 02 दिन रात्रि निवास कर लोगों से संपर्क किया और सभी 16,850 गांवों में सात योजनाओं की शत-प्रतिशत पहुंच सुनिश्चित की। उन्होंने कहा कि इस अभियान को सफल बनाने में केंद्र सरकार के लगभग 1,200 अधिकारी भी दिन-रात जुटे रहे, उन्होंने भी गांवों में रात्रि निवास किया और इन योजनाओं को नीचे तक पहुंचाने का कार्य बखूबी अंजाम दिया।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि 'ग्राम स्वराज अभियान' के तहत कुल 3,68,978 कार्यक्रम आयोजित किये गये और इसमें लगभग 1,28,72,468 लोगों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि देश के कई गांवों में 'ग्राम स्वराज अभियान' के तहत कार्यक्रम आयोजित किये गये, लेकिन चयनित 16,850 गांवों पर विशेष रूप से फोकस किया गया। उन्होंने कहा कि 'ग्राम स्वराज अभियान' के तहत आयोजित उज्ज्वला पंचायत में लगभग 10.93 लाख परिवारों को गैस कनेक्शन दिए गए। सौभाग्य योजना के तहत 52,434 परिवारों को बिजली दी गई, उजाला योजना के तहत 16,682 गांवों में लगभग 25.3 लाख एलईडी बल्ब वितरित किये गये, लगभग 20,53,599 जन-धन एकाउंट खोले गए, 330 रुपये के प्रीमियम पर 16,14,388 लोगों को 2 लाख का जीवन ज्योति बीमा दिया गया, 12 रुपये के प्रीमियम पर 2 लाख का जीवन सुरक्षा बीमा दिया गया और टीकारण से छूट गए 2 वर्ष से कम उम्र के 1,64,398 बच्चों एवं 42,762 गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया गया। उन्होंने कहा कि इस अभियान को सफलतापूर्वक पूरा करने में पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, जन-प्रतिनिधियों एवं केंद्र सरकार के 12 हजार अधिकारियों की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने कहा कि इन 16850 गांवों में लोगों को पहली बार यह अनुभूति हो रही है कि देश में गरीबों के लिए एक काम करने वाली सरकार है जो उन तक पहुंच कर उनकी समस्याओं का समाधान करती है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आजादी के बाद पहली बार किसी सरकार ने इतने बड़े पैमाने पर 16,850 गांवों को समस्या-मुक्त करने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम देश के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य के प्रति सदैव समर्पित हैं और 'ग्राम स्वराज अभियान' की सफलता से प्रोत्साहित होकर हम बाकी बचे गांवों में जायेंगे और उन गांवों को समस्याओं से मुक्त करेंगे। उन्होंने कहा कि हमने यह लक्ष्य तय किया है कि 15 अगस्त 2018 तक विकास में पीछे छूट गए 115 जिलों में से 1,000 सेज्यादा आबादी वाले लभग 45,000 गांवों में इन सात योजनाओं को घर-घर पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस तरह 15 अगस्त 2018 तक 65,000 गांव ऐसे होंगे जहां हर घर बिजली होगी, हर घर गैस कनेक्शन होगा, हर घर जन-धन खाता होगा, हर घर उजाला योजना होगी, हर घर जीवन सुरक्षा बीमा होगी, हर घर जीवन ज्योति बीमा होगी और हर बच्चे एवं गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण का काम पूरा हो चुका होगा। उन्होंने कहा कि इस तरह धीरे-धीरे देश के सभी गांवों तक इन सात योजनाओं को पहुंचाने के लिए मोदी सरकार संकल्पबद्ध है। उन्होंने कहा कि 2019 के लोक सभा चुनाव में जनादेश मांगने जाने से पहले हम देश के लगभग सभी गांवों में इन योजनाओं को पूरा कर चुके होंगे। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद 70 सालों में इतने बड़े पैमाने में गांवों को समस्याओं से मुक्त करने का बीड़ा पहले कभी नहीं उठाया गया था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पहली बार सरकार देश के गांवों और गरीबों तक पहुंची है, गरीब को सरकार के पास जाना नहीं पड़ा है। उन्होंने कहा कि एक लोक-कल्याणकारी सरकार किस तरह से देश के गांव और गरीब के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती है, यह मोदी सरकार ने सिद्ध कर के दिखाया है। ■

भारत और रूस के बीच रणनीतिक भागीदारी को और मिली मजबूती

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 21 मई को सोची (रूस) में रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन के साथ अनौपचारिक शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया। इस सम्मेलन से भारत और रूस के बीच विशेष और विशेषाधिकार युक्त रणनीतिक भागीदारी को और अधिक मजबूती मिली।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने राष्ट्रपति श्री पुतिन के साथ वार्ता को अत्यंत फलदायी बताया। उन्होंने कहा कि इस दौरान भारत-रूस संबंधों के हर पहलू की समीक्षा की गई। इसके अलावा वैश्विक मसलों और बहुध्रुवीय दुनिया की जरूरत को रेखांकित किया गया। दोनों नेताओं ने आतंकवाद और चरमपंथ पर चिंता व्यक्त की। साथ ही, उन्होंने नीति आयोग और रूस के आर्थिक विकास मंत्रालय के बीच रणनीतिक आर्थिक वार्ता पर भी सहमति व्यक्त की।

गौरतलब है कि हाल ही में वुहान में चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग से हुई मुलाकात के बाद प्रधानमंत्री श्री मोदी का यह दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन था। ख़ास बात यह भी है कि श्री मोदी इसी साल जून महीने में होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन में श्री पुतिन से मिलेंगे, इसके बाद दक्षिण अफ्रीका में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और अर्जेंटीना में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान भी दोनों नेताओं की मुलाकात होनी है।

बातचीत के दौरान श्री मोदी ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की स्थायी सदस्यता दिलाने में भारत की मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने पर रूस को धन्यवाद दिया। दरअसल, आठ राष्ट्रों के इस संगठन का उद्देश्य सदस्य देशों में सैन्य एवं आर्थिक सहयोग बढ़ाना है। भारत और पाकिस्तान को इस संगठन में पिछले साल शामिल किया गया था। श्री मोदी ने कहा कि हम अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (आईएनएसटीसी) और ब्रिक्स पर साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन के साथ सोची में अपनी पहली अनौपचारिक शिखर वार्ता में भारत-रूस संबंधों के अन्य आयामों को भी रेखांकित किया। श्री मोदी ने इस दौरान कई बार पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जिक्र किया। 2001 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ अपने पहले रूस दौरे को याद करते हुए श्री मोदी ने कहा कि उनके राजनीतिक कॅरिअर में भी रूस और पुतिन काफी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि पुतिन पहले वैश्विक नेता थे, जिनसे उन्होंने गुजरात का मुख्यमंत्री बनने के बाद मुलाकात की थी।

संबंधों में नई जान फूंकेगा मोदी का दौरा: व्लादिमीर पुतिन

प्रधानमंत्री श्री मोदी का स्वागत करते हुए श्री पुतिन ने 21 मई को कहा कि उनका दौरा द्विपक्षीय संबंधों में नई जान फूंकेगा। उन्होंने कहा कि हमारे रक्षा मंत्रालय बेहद करीबी संपर्क और सहयोग बनाए रखते हैं। यह अपने आप में हमारी बेहद उच्चस्तरीय रणनीतिक साझेदारी को बयान करते हैं। उन्होंने विदेशी नीति के क्षेत्र में दोनों देशों के संयुक्त सहयोग की भी प्रशंसा की। रूसी राष्ट्रपति ने इसके लिए संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स और एससीओ का खासतौर पर जिक्र किया। श्री पुतिन ने कहा कि पिछले साल आपसी व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और इस साल के पहले कई महीनों में 17 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है।

वहीं, रूसी विदेश मंत्री श्री सर्गेई लावरोव के हवाले से सरकारी समाचार एजेंसी तास ने कहा है कि काफी गहन वार्ता हुई। श्री सर्गेई ने कहा कि मैं आश्वस्त हूं कि दोनों नेताओं की अनौपचारिक बातचीत हमारे विकास और रणनीतिक साझेदारी की गाइडलाइंस को और भी परिभाषित करेगी। क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में हमारे विशिष्ट सहयोग पर भी बातचीत हुई है।' ■

नक्सल प्रभावित क्षेत्र में 40 से 45 प्रतिशत की कमी: राजनाथ सिंह

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि नक्सलवाद एक चुनौती है, लेकिन यह बुराई अब कम हो रही है और अपना आधार खो रही है। सुरक्षा बलों के हताहत होने की संख्या में करीब-करीब 53 से 55 प्रतिशत कमी आई है। नक्सलवाद का भौगोलिक विस्तार भी 40 से 45 प्रतिशत कम हुआ है। इस उपलब्धि का श्रेय सीआरपीएफ के जवानों और राज्य पुलिस को जाता है।

गृह मंत्री ने यह बात 21 मई को छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर में सीआरपीएफ की 241 बस्तारिया बटालियन की पासिंग आउट परेड में कही। इस अवसर पर एकत्र जनसमूह को संबोधित करते हुए गृहमंत्री ने वामपंथी उग्रवाद से मुकाबला करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और राज्य पुलिस के प्रयासों की सराहना की।

इस बात पर जोर देते हुए कि नक्सल समस्या से मुकाबला करने के लिए विकास ही सबसे बड़ा हथियार है, गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा, 'मैं जानता हूं कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉक्टर रमण सिंह राज्य का संपूर्ण विकास करने का प्रयास कर रहे हैं, वह राज्य के सुदूरवर्ती इलाकों के विकास पर ध्यान दे रहे हैं ताकि समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके'। लेकिन माओवादी नहीं चाहते कि यह इलाके विकसित हों, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि यदि विकास होगा तो उनके मंसूबे कभी सफल नहीं होंगे।

उन्होंने कहा कि हम राज्य के प्रत्येक गांव के लिए सड़क सम्पर्क, बिजली और अन्य बुनियादी ढांचा सुनिश्चित कर रहे हैं। कुछ गांव अभी भी बिजली से वंचित हैं और लोगों को नक्सलियों द्वारा पैदा की जा रही बाधाओं के कारण परेशानी हो रही है, लेकिन मैं आश्वासन देना चाहता हूं कि कोई भी बाधा इन इलाकों में विकास की प्रक्रिया नहीं रोक सकती।

सुरक्षा बलों द्वारा किए गए कार्य और बलिदानों की सराहना करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा, "कोई भी धनराशि हमारे जवानों के बलिदान की भरपाई नहीं कर सकती, लेकिन देश की सेवा में अपने प्राणों की आहुति देने वालों के परिवारों के प्रति हमारी कुछ जिम्मेदारी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमने फैसला किया है कि शहीद जवान के परिवार को एक करोड़ रुपये से कम धनराशि नहीं दी जानी चाहिए, जो उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।"

उन्होंने कहा कि नक्सली नेता अपने बच्चों को प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पढ़ाना चाहते हैं, जबकि वे गरीब आदिवासी समुदायों के बच्चों को गुमराह करते हैं। उन्होंने कहा वामपंथी उग्रवादी चाहते हैं कि आदिवासी लोग हमेशा गरीब रहें, क्योंकि उनके लिए ऐसा करना सुविधाजनक है। कुछ नक्सली नेताओं की जीवनशैली उनकी संपन्नता और समृद्धि को दर्शाती है।

नक्सली नेताओं के बच्चे विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई कर रहे हैं, वे गरीबों के बच्चों को गुमराह करते हैं। लेकिन हमने फैसला किया है कि ऐसे सभी नक्सली नेता, जिन्होंने गरीब लोगों का इस्तेमाल करके भारी संपत्ति जमा कर ली है और वे इन लोगों की अज्ञानता का लाभ उठा रहे हैं, उन्हें गंभीर सजा दी जाएगी।

गौरतलब है कि बस्तारिया बटालियन 1 अप्रैल, 2017 को अस्तित्व में आई। इसका गठन बस्तारिया युवकों को रोजगार देने के लिए एक विश्वसनीय और आसान मंच प्रदान करने के अलावा बस्तर क्षेत्र में सीआरपीएफ की युद्ध स्थिति में स्थानीय प्रतिनिधित्व बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया है। ■

64 करोड़ रुपये की लागत से राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत हिमित वीर्य केंद्र की स्थापना

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने 12 मई को पूर्णिया के मरंगा में हिमित वीर्य केंद्र का शिलान्यास करते हुए कहा कि हिमित वीर्य केंद्र की स्थापना केंद्र सरकार से 100 प्रतिशत योगदान के साथ राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत 64 करोड़ रुपये की लागत से की जा रही है। इसमें 20 करोड़ रुपये पहले ही जारी किए जा चुके हैं। वर्तमान में कृत्रिम निषेचन का कार्य बिहार में सीएमओएफईडी (सुधा) द्वारा किया जा रहा है। कृत्रिम निषेचन के लिए उच्च आनुवंशिक योग्यता वाले सांडों की आवश्यकता होती है।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद से यह पहली सरकार है जो जमीनी स्तर पर किसानों के कल्याण के लिए ठोस कदम उठा रही है। किसानों की स्थिति में सुधार लाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2022 तक किसानों की आय को दोगुनी करने का संकल्प किया है और इसे अर्जित करने के लिए कृषि मंत्रालय पशुपालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग के साथ पूरे मनोयोग से काम कर रहा है। श्री सिंह ने कहा कि पूर्णिया स्थित हिमित वीर्य केंद्र देश का अत्याधुनिक वीर्य उत्पादन केंद्र होगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय गोकुल मिशन की पहल दिसंबर 2014 में स्वदेशी नस्लों को संरक्षित करने एवं विकसित करने के लिए की गई थी। ■

नेपाल के साथ सांस्कृतिक-आर्थिक संबंध और मजबूत हुए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 11-12 मई को नेपाल की अत्यंत सफल यात्रा की। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच संबंधों में न सिर्फ प्रगाढ़ता आई, बल्कि इनके बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक-आर्थिक संबंध और मजबूत हुए। श्री मोदी ने दो दिन की अपनी नेपाल यात्रा को 'ऐतिहासिक' बताया। उन्होंने कहा कि नेपाल के प्रधानमंत्री श्री केपी शर्मा ओली के साथ उनकी बातचीत 'उपयोगी' रही और उनकी यात्रा से भारत-नेपाल संबंधों को नया बल मिलेगा।'

यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद शर्मा ओली ने संयुक्त रूप से 900 मेगावॉट के अरुण-थ्री हायड्रो इलेक्ट्रिक प्रॉजेक्ट की आधारशिला रखी। अपने संबोधन में श्री मोदी ने कहा कि नेपाल बिजली उत्पादन के क्षेत्र में तेज़ी से विकास कर रहा है। आज भारत से लगभग 450 मेगावाट बिजली नेपाल को सप्लाई होती है। इसके लिए हमने नई ट्रांसमिशन लाइंस बिछाई हैं। श्री मोदी ने यह भी कहा कि पिछले महीने दोनों देशों ने कृषि क्षेत्र में एक नई साझेदारी की घोषणा की है। इसके तहत कृषि के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा। दोनों देशों के किसानों की आमदनी कैसे बढ़ाई जाए इस पर ध्यान दिया जाएगा। खेती के क्षेत्र में साइंस और टेक्नॉलॉजी के इस्तेमाल में सहयोग बढ़ाया जाएगा।

यही नहीं, प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद शर्मा ओली, पूर्व प्रधानमंत्री श्री शेर बहादुर देउबा, श्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' और अन्य राजनेताओं से भी मुलाकात की। दरअसल, 11 मई को प्रधानमंत्री श्री मोदी और प्रधानमंत्री श्री ओली के बीच कई बार मुलाकात हुई। इस मुलाकात के दौरान नेपाल के प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद ओली ने कहा कि नेपाल भारत की चिंताओं को लेकर संवेदनशील है। भारत के खिलाफ होने वाले किसी भी कदम के निए नेपाल की धरती का इस्तेमाल नहीं होने दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 11-12 मई को पड़ोसी देश नेपाल की सफल यात्रा की। प्रधानमंत्री के नाते यह उनका तीसरा दौरा था। इस यात्रा के दौरान उन्होंने नेपाल के प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद शर्मा ओली के साथ संयुक्त रूप से 900 मेगावॉट के अरुण-थ्री हायड्रो इलेक्ट्रिक प्रॉजेक्ट की आधारशिला रखी और रामायण सर्किट के तौर पर रामायण से जुड़ी जगहों के लिए बस सर्विस भी शुरू की। गौरतलब है कि इसके पहले अप्रैल में नेपाल के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद शर्मा ओली तीन दिवसीय दौरे पर भारत आए थे।

अयोध्या–जनकपुर बस सर्विस

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 11 मई को सीता के मायके और ऐतिहासिक शहर जनकपुर पहुंचे। प्रधानमंत्री श्री मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री श्री ओली ने जनकपुर से अयोध्या की बस सर्विस का उद्घाटन किया। इससे दोनों देशों के टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। इस दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने बताया कि पिछले महीने ही मोदी और ओली ने इंटीग्रेटेड

चेक पोस्ट का भी उद्घाटन किया।

यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नेपाल के कई मंदिरों में दर्शन भी किए। श्री मोदी ने 11 मई को जनकपुर धाम में दर्शन किए, तो 12 मई को मुक्तिनाथ धाम और पशुपतिनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की। इस दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि राजा जनक और जन-कल्याण के इस संदेश को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। नेपाल और भारत के संबंध राजनीति, कूटनीति, समरनीति से परे देव-नीति से बंधे हैं। व्यक्ति और सरकारें आती-जाती रहेंगी, पर ये संबंध अजर, अमर हैं।'

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 11 मई को अपने प्रेस वक्तव्य में कहा कि वैसे तो नेपाल से मेरा बहुत पुराना नाता रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री के रूप में नेपाल की यह मेरी तीसरी यात्रा है। इससे यह स्पष्ट है कि नेपाल के प्रति, और भारत-नेपाल संबंधों के प्रति, मेरी और मेरी सरकार की प्रतिबद्धता कितनी गहरी है और चाहे मैं प्रधानमंत्री के रूप में आया हूं, या फ़िर एक सामान्य नागरिक के रूप में, नेपाल के लोगों ने मुझे हमेशा अपना माना है और परिवार के सदस्य की तरह मेरा स्वागत किया है।

श्री मोदी ने कहा कि मेरी यह नेपाल यात्रा एक ऐसे ऐतिहासिक समय में हो रही है, जब नेपाल में फ़ेडरल, प्रोविन्सिअल और लोकल, तीनों स्तरों पर चुनावों का सफ़ल आयोजन हो चुका है। नेपाल के इतिहास में यह कालखंड स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। नेपाल की जनता ने आर्थिक और सामाजिक प्रगति और परिवर्तन के लिए, राष्ट्र-निर्माण के लिए प्रधानमंत्री ओली जी के नेतृत्व और विज़न में अपना भरोसा जताया है।

प्रधानमंत्री ने कहा नेपाल के लोगों द्वारा संघीय, लोकतांत्रिक फ्रेमवर्क में राष्ट्र-निर्माण और विकास यात्रा के फ़ैसले का मैं अभिनंदन करता हूं। एक अखंड, समृद्ध और सशक्त नेपाल के लिए सभी नेपाली लोगो की आकांक्षा का भारत समर्थन करता है। समावेशी विकास और आर्थिक समृद्धि के आपके प्रयासों की सफ़लता के लिए भारत के सवा सौ करोड़ लोगों की शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

उन्होंने कहा कि भारत के लिए हमारा "सबका साथ, सबका विकास" का विज़न और नेपाल के लिए ओली जी का "समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली" का नारा एक दूसरे के पूरक हैं। आज हमने एक बार फ़िर भारत और नेपाल की साझेदारी के सभी आयामों की समीक्षा की। लगभग पांच सप्ताह पहले प्रधानमंत्री ओली जी भारत आए थे, तो उन्होंने मुझसे कई विषयों का उल्लेख किया था।

नेपाल लैंड-लॉक्ड न रहे, बल्कि लैंड-लिंक्ड और वाटर-लिंक्ड हो: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि इतने कम समय में ही दोनों देशों की टीमों ने मिलकर सभी मुद्दों पर काम किया है और कई मुद्दों को तो सुलझा भी लिया है। आज की हमारी बातचीत में मैंने इस प्रगति के बारे में प्रधानमंत्री ओली जी को विस्तार से जानकारी दी। हमने कृषि, इनलैंड वाटरवेज और रेलवेज में कई परिवर्तनकारी पहलों की शुरुआत की है। इससे दोनों देशों के लोगों और व्यवसायों की आपसी कनेक्टिविटी बढ़ेगी।

श्री मोदी ने कहा कि मैं इनलैंड वाटरवेज में हमारे सहयोग को विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानता हूं। नेपाल लैंड-लॉक्ड न रहे, बल्कि लैंड-लिंक्ड और वाटर-लिंक्ड हो, हम प्रधानमंत्री ओली जी के इस विज़न को साकार करने में हर संभव सहायता और प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे कृषि मंत्री शीघ्र ही मिलेंगे और कृषि अनुसन्धान, कृषि शिक्षा और कृषि विकास में सहयोग के लिए रोडमैप तैयार करने पर काम करेंगे। रक्सौल और काठमांडू के बीच नए रेलवे लिंक के लिए सर्वे का काम शीघ्र ही शुरू होगा और ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट में हमारे संबंधों को और अधिक मजबूत करने के लिए, हम शीघ्र ही व्यापार संधि का comprehnsive review भी करेंगे। स्वास्थ्य सहयोग में हम एक नया क़दम उठा रहे हैं। काठमांडू में

स्थित भक्तपुर कैंसर अस्पताल में कैंसर रोगियों के इलाज के लिए हम शीघ्र ही भारत में विकसित भाभाट्रोन रेडियो-थेरपी मशीन स्थापित करेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा हमारे जल-संसाधन और उर्जा सहयोग में आज एक नया अध्याय जुड़ा है। प्रधानमंत्री ओली जी के साथ मिलकर आज मुझे 900 मेगावाट की अरुण-थ्री विद्युत् परियोजना की नींव रखने का सौभाग्य मिला। लगभग 6000 करोड़ भारतीय रुपयों के निवेश की यह परियोजना नेपाल में होने वाले सबसे बड़े प्रोजेक्ट्स में एक है। नेपाल में रोजगार के अवसरों के साथ इस प्रोजेक्ट से नेपाल में आर्थिक और व्यावसायिक अवसर भी बनेंगे। पंचेश्वर प्रोजेक्ट एवं हाइड्रोपावर, जल-संसाधन और ऊर्जा के क्षेत्रों में अपने सहयोग के अन्य प्रोजेक्ट्स पर भी हम अपनी बातचीत आगे बढ़ा रहे हैं। ■

प्रधानमंत्री ने 'किशनगंगा पनबिजली परियोजना' राष्ट्र को समर्पित किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 मई को जम्मू-कश्मीर का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने 'किशनगंगा पनबिजली परियोजना' राष्ट्र को समर्पित किया और साथ ही 19वें कुशोक बाकुला रिनपोचे के जन्म शताब्दी जश्न के समापन समारोह में भाग लिया। इसके अलावा श्री मोदी ने जोजिला सुरंग पर कार्य आरंभ करने के लिए फलक का अनावरण भी किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 मई को जम्मू एवं कश्मीर में किशनगंगा पनबिजली परियोजना का उद्घाटन किया एवं पाकल दुल बिजली परियोजना का शिलान्यास किया। 1000 मेगावाट क्षमता के साथ पाकल दुल पूरे होने पर जम्मू एवं कश्मीर की सबसे बड़ी पनबिजली परियोजना होगी। यह जम्मू एवं कश्मीर में पहली भंडारण परियोजना भी है।

किशनगंगा पनबिजली परियोजना राज्य को 13 प्रतिशत की निःशुल्क बिजली उपलब्ध कराएगी, जो लगभग 133 करोड़ रुपये प्रति वर्ष के बराबर होगी। इस परियोजना से राज्य को अन्य लाभ भी होंगे जैसे जम्मू एवं कश्मीर के लोगों को रोजगार मिलेगा, राज्य में बुनियादी ढांचे का विकास होगा आदि। ऐसा अनुमान है कि निर्माण चरण के दौरान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के माध्यम से इस परियोजना में 1850 स्थानीय व्यक्ति शामिल होंगे तथा परिचालन चरण के दौरान 750 स्थानीय व्यक्ति इससे जुड़ेंगे।

जम्मू–कश्मीर सरकार एवं भारत सरकार के बिजली मंत्रालय के बीच जुलाई 2000 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद राज्य सरकार द्वारा निष्पादन के लिए इस परियोजना को एनएचपीसी को सुपुर्द कर दिया गया था।

दरअसल, आर्थिक मामलों पर मंत्रिस्तरीय समिति की मंजूरी के अनुसार पाकल दुल की परियोजना लागत 8112.12 करोड़ रुपये है तथा यह भारत सरकार एवं जम्मू-कश्मीर सरकार दोनों से समर्थित है। इसके कार्यान्वयन की समय सीमा परियोजना के आरंभ होने से 66 महीनों की है। इससे डाउन स्ट्रीम परियोजनाओं में 650 एमयू का अतिरिक्त सृजन होगा, क्योंकि यह भंडारण प्रकार की परियोजना है और खाली मौसम में जल उपलब्धता में भी सुधार लाएगी।

पाकल दुल परियोजना से जम्मू एवं कश्मीर के लोगों को काफी लाभ पहुंचेगा। निर्माण चरण के दौरान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के माध्यम से इस परियोजना से लगभग 3000 व्यक्तियों तथा परिचालन चरण के दौरान 500 व्यक्तियों को इससे रोजगार मिलेगा।

साथ ही प्रधानमंत्री ने पिछले चार वर्षों के दौरान उन विभिन्न

अवसरों का स्मरण भी किया, जब उन्होंने जम्मू-कश्मीर राज्य का दौरा किया था। उन्होंने कहा कि रमजान का महीना पैगम्बर मोहम्मद के उपदेशों एवं संदेशों को याद करने का समय है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 330 मेगावाट की किशनगंगा पनबिजली परियोजना राज्य की बिजली आवश्यकताओं की आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने राज्य के तीनों क्षेत्रों- कश्मीर, जम्मू एवं लद्दाख के संतुलित विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

जोजिला सुरंग पर कार्य आरंभ करने के लिए फलक का अनावरण

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 19 मई को लेह में 19वें कुशोक बाकुला रिनपोचे के जन्मशताब्दी जश्न के समापन समारोह में भाग लिया। इसी समारोह में उन्होंने जोजिला सुरंग पर कार्य आरंभ करने के लिए फलक का अनावरण किया।

14 किलोमीटर लम्बी जोजिला सुरंग भारत की सबसे लम्बी सड़क सुरंग और एशिया की सबसे लम्बी दो विपरीत दिशाओं वाली सुरंग होगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने इस वर्ष के शुरू में 6800 करोड़ रुपये की कुल लागत से एनएच-1ए के श्रीनगर-लेह सेक्शन पर बालटाल और मीनामार्ग के बीच निर्गम सुरंग के साथ दो विपरीत दिशाओं वाली दो लेन की सुरंग के निर्माण, परिचालन और रख-रखाव की मंजूरी दे दी थी।

इस सुरंग के निर्माण से श्रीनगर, कारगिल और लेह के बीच हर मौसम में संपर्क प्रदान किया जा सकेगा। यह मार्ग वर्ष के अधिकांश हिस्से में बर्फ से ढका रहता है और अक्सर यहां बर्फीले तूफान आते हैं। इसके कारण लद्दाख क्षेत्र के स्थानों के लिए सड़क संपर्क में लम्बे समय तक बाधा आती है, जिससे लोगों तक आवश्यक आपूर्ति पहुंचाने में दिक्कत आती है, व्यवसाय ठप्प हो जाता है, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा प्रभावित होती है। इस सुरंग के बन जाने से हर मौसम में इस क्षेत्र के लोगों को संपर्क प्रदान कर राहत दी जा सकेगी। इससे जोजिला दर्रे को पार करने के लिए वर्तमान में लगने वाले साढ़े तीन घंटे की अवधि सिर्फ 15 मिनट रह जाएगी और गाड़ी चलाना सुरक्षित और सुविधाजनक हो जाएगा।

सुरंग के निर्माण से इस क्षेत्र के चौतरफा आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण की उम्मीद है। निर्माण के दौरान प्रत्यक्ष नौकरियां सृजित होने के साथ, आर्थिक वृद्धि में तेजी के कारण इससे बड़े पैमाने पर अप्रत्यक्ष और अनपेक्षित नौकरियां मिलेंगी। सरकार जम्मू-कश्मीर में सुरंग बनाने से जुड़ी नौकरियों के लिए कुशल श्रम-बल के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इस परियोजना का रणनीतिक और सामाजिक-आर्थिक महत्व है और यह जम्मू-कश्मीर के आर्थिक रूप से पिछड़े जिलों के विकास में साधक होगा।

जोजिला सुरंग की योजना एक स्मार्ट सुरंग के रूप में बनाई गई है। इसमें आधुनिकतम सुरक्षा विशेषताएं जैसे पूरी तरह अनुप्रस्थ वायु संचार प्रणाली, लगातार बिजली की आपूर्ति, सुरंग में आपात रोशनी, सीसीटीवी, निगरानी, परिवर्तनशील संदेश संकेत, ट्रैफिक लॉगिंग उपकरण, अधिक ऊंचाई वाले वाहनों की पहचान, सुरंग रेडियो प्रणाली आदि की व्यवस्था होगी। इसमें प्रत्येक 250 मीटर पर पैदल और मोटर से चलने वाले यात्रियों के लिए पार करने के रास्तों की व्यवस्था होगी और प्रत्येक 750 मीटर पर बचाव स्थल होंगे। इसमें प्रत्येक 125 मीटर पर आपात स्थिति पर टेलीफोन और दमकल कैबिनेट भी उपलब्ध होंगे।

श्रीनगर और जम्मू में रिंग रोड का उद्देश्य इन शहरों में यातायात की भीड़भाड़ को कम करना और सड़क यात्रा को सुरक्षित, तेज, अधिक सुविधाजनक तथा अधिक पर्यावरण अनुकूल बनाना है। चार लेन वाली 42.1 किलोमीटर लम्बी श्रीनगर रिंग रोड पश्चिमी श्रीनगर के गलंदर को सुम्बल से जोड़ेगी। 1860 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली यह सड़क श्रीनगर से कारगिल और लेह के लिए एक नया मार्ग प्रदान करेगी तथा यात्रा समय कम करेगी। इसमें एक बड़ा पुल, तीन फ्लाईओवर, 23 सुरंगें और 2 मार्ग सेतु होंगे।

चार लेन वाली 58.25 किलोमीटर लम्बी जम्मू रिंग रोड 2023.87 करोड़ रुपये की लागत से बनाई जा रही है। यह जगाती (पश्चिमी जम्मू) को रायमोड़ से जोड़ेगी। इस मार्ग में 8 बड़े पुल, 6 फ्लाईओवर, 2 सुरंग और 2 मार्ग सेतु होंगे।

इस अवसर पर एक विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने 19वें कुशोक बाकुला रिनपोचे के महान योगदान का स्मरण किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका जीवन दूसरों की सेवा के लिए समर्पित था। उन्होंने कहा कि 19वें कुशोक बाकुला रिनपोचे ने एक असाधारण राजनयिक के रूप में अपनी विशिष्टता स्थापित की थी। उन्होंने उल्लेख किया कि मंगोलिया की अपनी यात्रा के दौरान वह खुद उनके प्रति सद्भावना के साक्षी रहे थे।

उन्होंने कहा कि जम्मू एवं कश्मीर राज्य को 25 हजार करोड़ रुपये के बराबर की परियोजनाएं प्राप्त होने वाली हैं। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं का राज्य के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। ■

कमल संदेश के आजीवन सदस्य बने

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

आज ही लीजिए कमल संदेश की सदस्यता और दीजिए राष्ट्रीय विचार के संवर्धन में अपना योगदान!

सदस्यता प्रपत्र

नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन : .....

दूरभाष : ..... मोबाइल : (1)..... (2).....

ईमेल : .....

सदस्यता						
	एक वर्ष	₹350/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी/अंग्रेजी)	₹3000/-	☐
	तीन वर्ष	₹1000/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी+अंग्रेजी)	₹5000/-	☐

(भुगतान विवरण)

चैक/ड्राफ्ट क्र. :..... दिनांक :..... बैंक : .....

नोट : डीडी / चैक '**कमल संदेश**' के नाम देय होगा।
मनी आर्डर और नकद पूरे विवरण के साथ स्वीकार किए जाएंगे।

(हस्ताक्षर)

कमल संदेश

अपना डीडी/चेक निम्न पते पर भेजें

डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003

फोन: 011-23381428 फैक्स: 011-23387887 ईमेल: kamalsandesh@yahoo.co.in

कमल संदेश: राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

सोची (रूस) में रूस के प्रतिभाशाली युवाओं से संवाद स्थापित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन

सोची (रूस) में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का स्वागत करते रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन

नेपाल स्थित जनकपुर के जानकी मंदिर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद शर्मा ओली

नेपाल के जनकपुर से उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या तक बस सेवा का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री श्री खड्ग प्रसाद शर्मा ओली

जम्मू–कश्मीर स्थित लेह में जनाभिवादन स्वीकार करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

जम्मू स्थित वैष्णो देवी में विभिन्न योजनाओं का लोकार्पण करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रेषण तिथि: (i) 1-2 चालू माह (ii) 16-17 चालू माह
डाकघर: लोदी रोड एचओ., नई दिल्ली **"रजिस्टर्ड"**
36 पृष्ठ कवर सहित

आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953
डी.एल. (एस)-17/3264/2018-20
Licence to Post without Prepayment
Licence No. U(S)-41/2018-20